Toppersnotes®
Unleash the topper in you

3rd – ग्रेड

अध्यापक

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

भाग - 6

सामाजिक अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	मुगल साम्राज्य	1
2	भारत का बजट 2025–26	16
3	आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25	21
4	कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र	27
5	ग्रामीण विकास और पंचायती राज	35
6	आधारभूत संरचना और संसाधन	40
7	सेवा क्षेत्र	44
8	राजस्थान में शहरी विकास	50
9	राज्य वित्त एवं विकास के अन्य संसाधन	56
10	पृथ्वी के प्रमुख स्थलरुप	60
11	भारत की प्राकृतिक वनस्पति	81
12	भारतीय संविधान	90
13	संविधान निर्माण में राजस्थान का योगदान	104
14	राजस्थान में लोक प्रशासन	106
15	सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति	112
16	सामाजिक अध्ययन में सहायक सामग्री	114
17	सामाजिक अध्ययन की समस्या	127
18	सामाजिक अध्ययन में प्रायोजना कार्य	129
19	सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन, निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	130

1 CHAPTER मुगल साम्राज्य

विस्तार

- मुग़ल साम्राज्य का **विस्तार** पश्चिम में **सिंधु नदी की घाटी से** ,उत्तर पश्चिम में **अफगानिस्तान** तक, ,उत्तर में **कश्मीर** तक ,पूर्व में वर्तमान **असम** और **बांग्लादेश** तक , तथा दक्षिण भारत में **दक्कन के पठार तक** फैला हुआ था ।
- अपने चरम पर मुगल साम्राज्य ने लगभग **पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर अधिकार** कर लिया था।
- मुग़ल काल को **दो भागो में विभाजित** किया गया है **- प्रारंभिक मुग़ल काल 1556 - 1707 ई तक .**और **उत्तर मुग़ल काल 1707-1857 तक**
- **भारत में संस्थापक: बाबर** (अपने पिता की ओर से तैमूर और अपनी माँ के सम्बन्ध में चंगेज खान से संबंधित था)।
- बाबर के **पिता फरगना (उजबेकिस्तान)** के **शासक** थे लेकिन जल्द ही उन्होंने **अपना राज्य खो दिया।**
- **काबुल पर उज्बेक हमले और राणा सांगा एवं दोलत खान लोदी** के **भारत आक्रमण के निमंत्रण** से **बाबर भारत की ओर** आगे बढ़ा ।

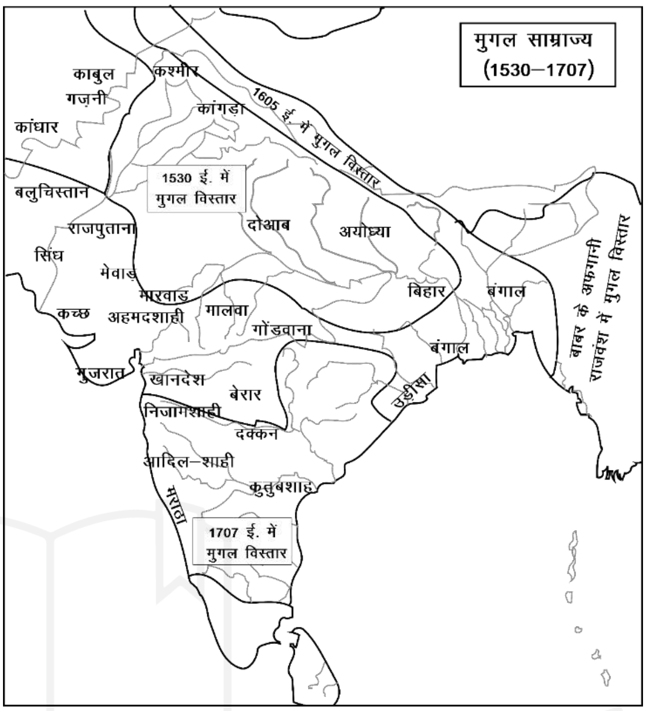

मुगल वंशावली

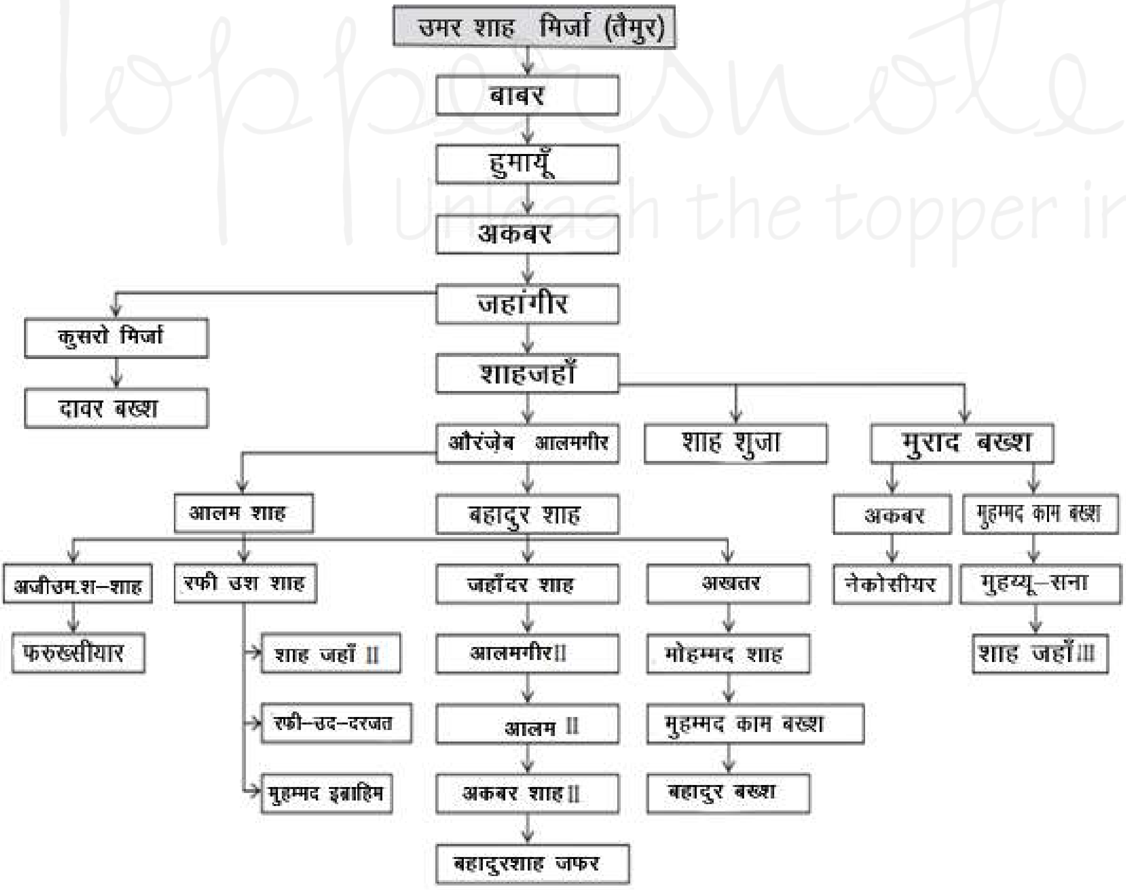

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सम्राट

बाबर (1526-1530 ई.)

- **मुग़ल वंश** का **संस्थापक** था
- बाबर का **पूरा नाम जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर** था !
- बाबर का **जन्म 14 फरवरी 1483 को फरगना (उजबेकिस्तान)** मे हुआ था
- बाबर **चगताई तुर्क** था, अपने **पिता उमर शेख** की ओर से, बाबर तैमूर का वंशज था और अपनी **माँ कुतलुग निशार** की ओर से चंगेज खाँ का वंशज थे !

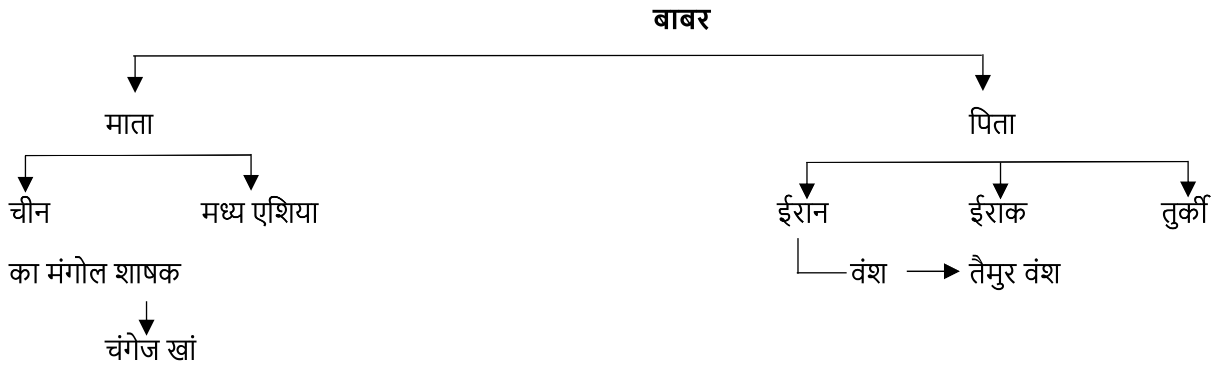

तैमूर

- **तुर्क-मंगोल विजेता** थे
- तैमूरों ने अपने साम्राज्य की स्थापना **आधुनिक अफगानिस्तान, ईरान , मध्य एशिया** के क्षेत्रो में की
- तैमूर को **महान सैन्य विजेताओ में से एक** माना जाता है
- तैमूर ने **1398ई में दिल्ली पर आक्रमण** किया।

- **बाबर ने 1504ई में** काबुल और गजनी पर विजय प्राप्त की।
- **1511ई में** समरकंद पर कब्जा किया।
- **बाबर ने 1519 -1524ई के बीच** भेरा, सियालकोट पर आक्रमण किया।
- पंजाब पर अधिकार करने के बाद **बाबर दिल्ली की ओर** बढ़ा और **1526ई** में **पानीपत की पहली लड़ाई** में बाबर ने दिल्ली के **सुल्तान इब्राहीम लोदी** को पराजित किया ।
- इस युद्ध में बाबर ने **ओटोमन साम्राज्य से माचिस गन और तोपो की सहायता ली।**
- **मार्च 1527 ई** में **खानवा** के **युद्ध** में बाबर ने **मेवाड़ के राणा सांगा को पराजित** किया ।
- **1528** में **चंदेरी** के **युद्ध** में बाबर ने **मेदनी राय को पराजित** किया
- मई **1529** में **घाघरा** के **युद्ध** में बाबर ने **अफगानों** की **सेना को पराजित** किया
- **दिसंबर 1530ई** में **लाहौर के पास मृत्यु** हो गई।
- बाबर **नक्शबंदिया सूफी ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार का अनुयायी** था ।
- बाबर **फारसी** और **अरबी** भाषा का **ज्ञाता** था ,अपनी मातृभाषा, **तुर्की में** भी उसने कई **पुस्तके लिखी** ।
- बाबर ने **तुजुक-ए-बाबरी / बाबरनामा** नामक तुर्की में अपना **संस्मरण** लिखा जिसे **अब्दुर रहीम खान-ए-खाना द्वारा फारसी** में **अनुवाद** किया।
- **चार-बाग, बहते पानी** और **फव्वारों** के साथ शानदार **उद्यानों का निर्माण करवाया** ।
- **रोहिलखंड , पानीपत और संभल** में **मस्जिदों का निर्माण** करवाया।

बाबर के युद्ध

1. **पानीपत की पहली लड़ाई (21 अप्रैल 1526ई.)**

- **21 अप्रैल 1526ई.** को **बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच युद्ध** लड़ा गया।
- बाबर की सेना ने **तोपों और बंदूको का प्रयोग** किया
- **तोप की आवाज** ने भी **लोदी के हाथियों को डरा दिया**, जिससे उन्होंने लोदी की सेना को ही कुचल दिया।
- बाबर के आगमन के साथ **उत्तर भारत में तोपखाने का उपयोग आम** हो गया।
- **भारतीय इतिहास के निर्णायक युद्धों** में से एक माना जाता है।
- **दिल्ली और आगरा** तक के पूरे क्षेत्र को **बाबर ने अपने नियंत्रण में ले लिया।**

2. खानवा का युद्ध (1527ई.)

- बाबर ने **राणा सांगा को हराया और गाज़ी की उपाधि** धारण की

3. चंदेरी का युद्ध (1528ई.)

- **चंदेरी- मालवा और बुंदेलखंड की सीमा** पर स्थित है
- **बाबर ने मेदिनी राय को पराजित किया** और चंदेरी को मालवा के **अहमद शाह** को सौंप दिया गया।

4. घाघरा का युद्ध(1529ई.)

- **महमूद लोदी के** अधीन अफगानों को **बाबर ने** पराजित किया

हुमायूँ (1530-1540 ई.)

- **पूरा नाम:** नसीरुद्दीन मुहम्मद 'हुमायूँ'।
- बाबर का **ज्येष्ठ पुत्र।**
- जन्म: **1508ई.**, जब **बाबर काबुल में था।**
- **1530ई.** में **22 वर्ष की आयु में गद्दी पर** बैठा।
- **2 प्रमख प्रतिद्वंद्वी**: गुजरात के बहादुर शाह और मालवा के शेर शाह सूरी

बहादुर शाह के साथ संघर्ष के कारण

- **बहादुर शाह दिल्ली पर अधिकार चाहता था और उसने** हुमायूँ के एक बहनोई **महदी ख्वाजा को** भी **राजनीतिक शरण** दी, जिसने **दिल्ली के सिंहासन का दावा** किया था।
- बहादुर शाह ने कुछ **लोदी राजकुमारों** को भी **आश्रय** दिया जो **हुमायूँ के दुश्मन थे** और **मुगलों से अपने खोए हुए क्षेत्रों को वापस पाना चाहते थे ।**

आयोजन

- बहादुर शाह ने **मालवा, चंदेरी और रणथंभौर** पर **कब्जा** कर लिया और **चित्तौड़ के किले की घेराबंदी** कर दी।
- राजपूतों ने **हुमायूँ से मदद की गुहार** लगाई।
- हुमायूँ **चित्तौड़ के लिए रवाना हुआ** लेकिन बाद में उसने अपना **विचार बदल दिया** और **बहादुर शाह पर हमला नहीं किया।**
- इस दौरान उसने **अपनी सेना को मजबूत किया** ,और **मालवा** पर **आक्रमण की योजना** बनायीं ।
- **बहादुर शाह मंदसौर** पंहुचा लेकिन **भाग गया** और **मांडू के किले में शरण ली**, हुमायूं ने उनका पीछा किया लेकिन मांडू से बहादुर शाह भागकर **चंपनेर, खंभात और अंत में गोवा चला गया।**
- इस प्रकार पूरा **मालवा और गुजरात हुमायूँ** के अधीन आ गया।
- अपने भाई **अस्करी को गुजरात का राज्यपाल** नियुक्त किया जो **अक्षम** साबित हुआ ।
- स्थिति के देखते हुए **बहादुर शाह ने मोंके का फायदा उठाया** और **गुजरात पर कब्जा** कर लिया।
- बहादुर शाह के नाम पर **मालवा पर मल्लू खान ने कब्जा** कर लिया।
- **गुजरात अभियान का परिणाम:**
  - **हुमायूँ ने गुजरात और मालवा** को उतनी ही जल्दी **खो दिया** जितना उसने हासिल किया था।
  - इन दो क्षेत्रों के नुकसान ने **हुमायूँ की प्रतिष्ठा को कम कर दिया।**

शेर शाह के साथ मुठभेड़

- **बाबर ने अफगानों को पराजित कर दिया** इसलिए अफगान हुमायूँ के भी विरोधी थे।
- **शेर शाह सूरी भी एक अफगान था ।**
- उसने **बिहार** में अपनी **स्थिति** को **मजबूत** किया और **चुनार के किले** पर **अधिकार** कर लिया।
- अफगान **अमीर शेरशाह के नेतृत्व में एक** हो गए।
- शेरशाह ने **बंगाल पर दो बार हमला किया** और वहां के **शासक से बड़ी मात्र में धन लूटा ।**
- **हुमायूँ ने शेर शाह की बढती हुई शक्ति से चिंतित** था।

संघर्ष की घटनाएं

- **चुनार की घेराबंदी (1532ई.):**
  - बंगाल और बिहार में **शेरशाह की सफलता ने हुमायूँ को चिंतित** कर दिया औ र उसे **पराजित करने के लिए हुमायूँ बिहार की ओर** बढ़ा।
  - हुमायूँ ने **बिहार में चुनार के किले को घेरने में लगभग छह महीने** बिताए।जिसके परिणाम स्वरुप दोनों के बीच समझोता हो गया।
- **चौसा का युद्ध (1539ई.)**
  - लगभग छह वर्षों तक **शेरशाह और हुमायूँ के बीच कोई बड़ा संघर्ष नहीं** हुआ।
  - इसी बीच **शेर शाह** ने अपनी **स्थिति को बहुत मजबूत किया** और अपनी सेना का पुनर्गठित किया।
  - चौसा में **शेर शाह की जीत** हुई उसने खुद को बंगाल का सुल्तान घोषित कर दिया।
- **कन्नौज का युद्ध (1540ई.):**
  - **चौसा में** अपनी हार के बाद **हुमायूं आगरा पहुंचा और अपने भाइयों से मदद मांगी लेकिन उन्हें एकजुट नहीं कर सका।**
  - इस क्रम में शेरशाह ने एक बड़ी सेना के साथ **कन्नौज की ओर आगे बढ़ा और हुमायूँ के साथ पुनः संघर्ष हुआ।**
  - संघर्ष में **शेरशाह जीत** गया और **हुमायूँ भाग कर आगरा पहुँच गया।**

संघर्षों के परिणाम

- कन्नौज की हार के बाद, **हुमायूँ ने 1540 - 1554ई.** तक लगभग **15 वर्ष निर्वासन में** बिताए।
- **शेरशाह दिल्ली का शासक बना।**

- **हार के कारण :**
    - हुमायूँ की **अफगान शक्ति की प्रकृति को समझने में असमर्थता।**
    - हुमायूँ में **संगठनात्मक क्षमता** का **अभाव।**
    - हुमायूँ के **भाइयों** का **असहयोगी रवैया।**
    - हुमायूँ की **अक्षमता।**
    - **शेरशाह** की **कूटनीतिक विशेषज्ञता**
    - हुमायूँ द्वारा **चुनार की घेराबंदी को हटाना** और **शेरशाह के साथ समझोता** कर लेना ।
    - शेर शाह में एक **सैन्य नेता के सारे गुण** थे जबकि **हुमायु में इसका आभाव** था।
    - **हुमायूँ** की **अदूरदर्शिता** , **मौज-मस्ती**,**अफीम** आदि के कारण उसने बहुमूल्य समय को बर्बाद कर दिया ।
    - **निचली भूमि** पर **हुमायूँ का युद्ध शिविर।**
    - कन्नौज में हुमायूँ की सेना पर **शेरशाह का अचानक हमला।**
- एक दिन जब **हुमायूँ पुस्तकालय की सीढ़ी से नीचे उतर रहा था तो गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया और कुछ दिनों में उसकी मृत्यु हो गयी।**
- **दिल्ली में** उनका **मकबरा** बनाया गया जो मुगल वास्तुकला की महान कृतियों में से एक है इसे **1993ई. में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल नामित** किया गया था।

कला और संस्कृति

- हुमायूँ ने दो फारसी चित्रकारों **मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद** को **आमंत्रित** किया और उन्हें अपना **दरबारी चित्रकार** बनाया।
- उसकी **सौतेली बहन गुलबदन बेगम ने हुमायूँ-नामा** की रचना की।
- **दिल्ली में** एक नए **शहर का निर्माण** किया जिसका नाम **दीनापनाह रखा** और दिल्ली में **ईसा खान की जमाली मस्जिद का** निर्माण करवाया ।
- **हुमायूँ के मकबरे** को **ताजमहल की नक़ल(प्रोटोटाइप**) कहा जाता है, इसे उनकी **विधवा हाजी बेगम ने बनवाया** था।

सूर साम्राज्य (1540-1555 ई.)

- **संस्थापक:** शेर शाह सूरी (1486-1545 ई.), मूल नाम - फरीद
- लोदी के बाद दूसरा **अफगान साम्राज्य** था।
- **शेर शाह दक्षिण बिहार (जौनपुर)** में सासाराम के जागीरदार हसन खान का पुत्र था ।
- शेर खान की **उपाधि उनके संरक्षक बहार खान लोहानी द्वारा** बाघ (शेर) को मारने पर प्रदान की गई।
- शेर शाह ने अपने **पिता की जागीर को प्रभावी ढंग से संभाला** और **महान सैन्य, प्रशासनिक कुशलता** भी हासिल की।
- शेर शाह ने **कन्नौज की लड़ाई में हुमायूँ** को फिर से **हराया** और 54 साल की उम्र में खुद को **हिंदुस्तान का सम्राट** घोषित किया।
- **शेर शाह** एक **धर्मनिष्ठ मुसलमान था ; उसने** अन्य धर्मों के प्रति **सहिष्णु रवैया अपनाया।**
- महत्वपूर्ण कार्यालयों में **हिंदुओं को नियुक्त** किया।
- **शेर** शाह को अपने **भाई आदिल खान के साथ संघर्ष** का सामना करना पड़ा।
- इस संघर्ष में शेर शाह के **पुत्र इस्लाम शाह (जलाल खान) ने नेतृत्व** किया

कला और संस्कृति

- पुराना किला **शेर मंडल का निर्माण करवाया**, जिसके अंदर एक **अष्टकोणीय इमारत** का निर्माण किया, **अवन सासाराम में स्वयं का मकबरा का भी निर्माण करवाया।**
- इसके अलावा **रोहतास किला (अब पाकिस्तान में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल), बिहार में रोहतासगढ़ किले** में और **पटना में शेर शाह सूरी मस्जिद का निर्माण किया।**
- शेरशाह के शासनकाल के दौरान **मलिक मोहम्मद जयसी** ने अपना **पद्मावत** पूरा किया गया।
- प्रसिद्ध इतिहासकार, **अब्बास खान सेरवानी** ने अपने शासनकाल के दौरान **तारिख-ए-शेरशाही** की रचना की।

प्रशासन

- केवल **पांच साल तक शासन** चला जिसमें एक **शानदार प्रशासनिक व्यवस्था को लागू** किया।
- साम्राज्य **सैंतालीस सरकारों में विभाजित** था।
- प्रत्येक सरकार में **मुख्य शिकदार** कानून और व्यवस्था के प्रभारी एवं , **मुख्य मुंसिफ** न्यायाधीश प्रशासन के प्रभारी थे।
- प्रत्येक **सरकार कई परगने में विभाजित** थी।
- **शिकदार** (सैन्य अधिकारी), **अमिल** (भू-राजस्व देखने वाला), **फोतेदार**(कोषाध्यक्ष), **और करकुन** (लेखाकार) होता था जो प्रशासन को सुचारू रूप से संचालित करते थे।
- **मौजा (गाँव) -** प्रशासन का निम्नतम स्तर।
- **अन्य प्रशासनिक इकाइयाँ** जिन्हें **इक्ता** कहा जाता है।
- **प्रमुख विभाग प्रमुख**
    - **दीवान-ए-विजारत** - राजस्व और वित्त के प्रभारी वजीर को भी कहा जाता है।
    - **दीवान-ए-आरिज -** सेना के प्रभारी।
    - **दीवान-ए-रिसालत -** विदेश मंत्री
    - **दीवान-ए-इंशा -** संचार मंत्री।
- अलाउद्दीन के **चेहरा और दाग प्रणाली को पुनर्जीवित** किया।
- **खास कैली** नामक अपनी **व्यक्तिगत शाही सेना** को बनाए रखा

भू-राजस्व प्रशासन

- **राजस्व अधिकारी -** आमिल
- ये **कानून राजस्व रिकॉर्ड** बनाए रखने के प्रभारी अधिकारी होते थे ।
- पहली बार **फसल दरों,उत्पादन,राजस्व का निर्धारण** किया गया ।
- हर साल भूमि मूल्यांकन को अपनाकर **भू-राजस्व प्रणाली में सुधार** किया और सभी **कृषि योग्य भूमि** को तीन भागों (अच्छा, मध्यम, बुरा) में **वर्गीकृत** किया।

- **राज्य के हिस्से का निर्धारण** करने के लिए **भूमि का मापन** किया गया।
- **राज्य का हिस्सा** - औसत उपज का 1/3भाग होता था जो नकद या फसल के रूप में भुगतान किया जाता है।
- **सिकंदरी गज (32 अंक) से मापी गई भूमि**।
- **दो दस्तावेज** बनाये गए :
  - **पट्टा (प्रत्येक किसान को भुगतान की जाने वाली राशि)**
  - **काबुलियत (समझौते का विलेख)**

सिक्के:

- नए तांबे के सिक्के - **बांध का प्रयोग किया गया।**
- **चांदी का रूपया (1 रुपया = 64 बांध)** और **सोने का सिक्का (अशरफी / मोहर) प्रयोग करने वाला पहला शासक था ।**

परिवहन और संचार

- **चार महत्वपूर्ण राजमार्ग बनाए:**
  - **सोनारगांव से सिंध:** पुरानी शाही सड़क जिसका निर्माण अशोक के शासन काल में किया गया था उसी को नए रूप में निर्मित करवाया जिसे ग्रैंड ट्रंक रोड कहते है जो ताम्रलिप्ति (बंगाल) को पुरुषपुर (पेशावर) से जोड़ता था।
  - **आगरा से बुरहामपुर।**
  - **जोधपुर से चित्तौड़।**
  - **लाहौर से मुल्तान**
- यात्रियों की सुविधा के लिए हाईवे पर सराय या विश्राम गृह बनवाए।

न्याय प्रणाली

- **पुलिस** को **कुशलतापूर्वक पुनर्गठित** किया गया
- उसके शासन के दौरान **अपराध कम** था।
- अलाउद्दीन के **चेहरा और दाग प्रणाली को पुनर्जीवित** किया**।**
- न्याय और ग्राम पंचायतों के लिए अलग-अलग जगहों प**र काजियों की नियुक्ति** की गई।
- **जमींदार** - स्थानीय स्तर पर **दीवानी** और **फौजदारी मामलों को देखते** थे।
- **धार्मिक कट्टरता न के बराबर** थी, जैसा कि उनकी **सामाजिक और आर्थिक नीति से स्पष्ट** है।

अकबर (1556-1605 ई.)

- **हुमायूँ का पुत्र** (शासनकाल 1556-1605ई.),
- अकबर ने अपने **संरक्षक बैरम खान** के मार्गदर्शन में, **पानीपत की दूसरी लड़ाई (1556ई.) में हेमू को हराया,** जिसके परिणाम स्वरुप **दिल्ली की गद्दी पर बैठा**
- **अकबर शासन में** हिंदुओं की , विशेषकर राजपूतों की भी भागीदारी थी।
- मुगल सेवा में **राजपूत राजकुमारों ने सेनापतियों और प्रांतीय गवर्नरों** (मनसबदार)के रूप में **सेवा** दी ।
- **गैर-मुसलमानों के खिलाफ भेदभाव कम हुआ** और **तीर्थयात्रा कर** एवं **जजिया** को **समाप्त** कर दिया ।
- राजपूत सरदारों के प्रति **सामंती नीति का पालन** किया गया।
- यदि वे अकबर को **बादशाह के रूप में स्वीकार** करते हैं, और **निश्चित सालाना धन राशि** देते हैं, आवश्यकता पड़ने पर **सैनिकों की आपूर्ति** करते हैं, और उसके साथ **वैवाहिक सम्बन्ध** रखते हैं, तो उन्हें अपने **पैतृक क्षेत्रों पर शासन** करने **की अनुमति** दी जाती है
- **युद्ध बंदियों को जबरन इस्लाम में परिवर्तित करने की प्रथा** को **समाप्त** कर दिया और हिंदुओं को अपने प्रमुख **विश्वासपात्र और नीति निर्माताओं के रूप में प्रोत्साहित** किया।
- **धार्मिक अनुदान**, जो अब **हिंदू पंडितों, जैन और ईसाई मिशनरियों और पारसी पुजारियों** सहित सभी धर्मों के विद्वान और धर्मपरायण लोगों को दिए जाते थे ।
- **दीन-ए इलाही** ("ईश्वरीय आस्था") नामक एक **नया धर्म** बनाया गया, जो **हिन्दू मुस्लिम भाईचारे पर आधारित** था।
- **इबादत खाना** की **स्थापना** की गयी जिसमें विभिन्न धर्मों के विद्ववानो के बीच धार्मिक बहस और चर्चा की जाती थी ।

कला के संरक्षक

- **आगरा** के **किले** को **लाल बलुआ पत्थर** से बनवाया। **लाहौर और इलाहाबाद के किले** का भी **निर्माण** करवाया।
- आगरा के पास **फतेहपुर सीकरी का निर्माण** करवाया
- इसके प्रवेश द्वार को **बुलंद दरवाजा (ऊंचा द्वार)** कहा जाता है।
- इसका **निर्माण** 1572 ई. में ग**ुजरात पर अकबर की जीत के उपलक्ष्य में** करवाया गया ।
- **फतेहपुर सीकरी की अन्य इमारतें:** जोधा बाई का महल, पंच महल, दीवान-ए -खास, दीवान-ए-आम और शेख सलीम चिश्ती का मकबरा।
- **अकबर का मकबरा सिकंदरा आगरा के पास** स्थित है जिसे जहाँगीर ने पूरा किया।
- वृंदावन में **गोविंद देव का मंदिर** बनवाया।
- **महाभारत** और **रामायण** को **फारसी भाषा में अनुवाद** करवाया और **चित्रों** के रूप में **प्रस्तुत** किया।
- **अकबरनामा -** मुगल चित्रों के मुख्य विषय ।
- **हम्ज़ानामा - 1200 पेंटिंग शामिल थे**, उनके शासनकाल के समय बनायीं गयी ।
- अकबर के शासनकाल में **मुगलों की प्रमुख भाषा फारसी बन गयी ।**
- अकबर के शासनकाल के **प्रमुख कवि**
  - **अबुल फजल** और उसके भाई **अबुल फैजी**, **अब्दुल कादिर बदौनी**- जिन्होंने किताबुल तवारीख लिखी, **ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद हरामी** -जिन्होंने तबाक़त-ए-अकबरी तारिख अल्फी को लिखा, **मुंतखब उल-अकबरी**, **उत्बी,** और **नाज़ीरी।**

- **हिंदी कवि:** तुलसीदास, जिन्होंने रामायण का हिंदी संस्करण, रामचरितमानस लिखा।

अकबर के नवरत्न

- अकबर **अनपढ़** था लेकिन **कलाकारों और बुद्धिजीवियों का बहुत बड़ा संरक्षक** था।
- **अकबर के नवरत्न:**

1. **अबुल फजल**
    - **आइन-ए-अकबरी** और **अकबरनामा की रचना** की।
    - दक्कन के युद्धों में **मुगल सेना का नेतृत्व** भी किया।
2. **फकीर अज़ियाओ दीन**
    - एक **सूफी फकीर** और अकबर के मुख्य सलाहकारों में से एक।
3. **फैजी**
    - **लीलावती** (गणित की पुस्तक) **का फारसी में अनुवाद** किया, और उनकी देखरेख में, म**हाभारत का फारसी में अनुवाद** किया गया।
4. **तानसेन**
    - **महान संगीतकार, ग्वालियर के हिंदू, रीवा के राजा रामचंद्र के दरबारी संगीतकार**।
    - ग्वालियर के महान सूफी रहस्यवादी संत **मुहम्मद गौस के अनुयायी** ।
    - **उन्होंने अनेक राग-रागनियों का आविष्कार किया।**
    - मियाँ की टोढ़ी, मियाँ की मल्हार, मियाँ की सारंग, दरबारी कान्हड़ा जैसे राग आज भी पारम्परिक संगीत के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राग माने जाते हैं।
    - मुख्य राग: मेघ मल्हार और दीपक।
    - अकबर ने उन्हें **'मियां' की उपाधि** प्रदान की थी
5. **राजा बीरबल/महेश दास**
    - अकबर ने राजा और बीरबल दोनों की उपाधि दी।
6. **राजा टोडर माल**
    - वे आधुनिक उत्तर प्रदेश के निवासी थे।
    - प्रारम्भ में उन्होंने शेरशाह सूरी के यहाँ नौकरी की।
    - सूरवंश के अन्त के उपरान्त वह अकबर की सेवा में आ गए।
    - 1572 ई. में उसकी नियुक्ति गुजरात प्रदेश के दीवान के रूप में हुई।
    - टोडरमल वित्तीय मामलों के विशेषज्ञ थे, अतएव अकबर ने उन्हें अपना अर्थमंत्री नियुक्त किया।
    - अकबर के शासन-काल में भूमि-बन्दोबस्त तथा मालगुजारी व्यवस्था में जो महत्त्वपूर्ण सुधार किए गए, उसके सूत्रधार टोडरमल थे।
    - इन सुधारों के लिए अकबर के साथ टोडरमल का भी नाम लिया जाता है।
    - अकबर ने उन्हें दीवान-ए-अशरफ की उपाधि दी।
7. **राजा मान सिंह**
    - मानसिंह भारमल का पौत्र था। उसने अनेक महत्त्वपूर्ण युद्धों में भाग लिया था।
    - एक **भरोसेमंद सेनापति।**
8. **अब्दुर्रहीम खान–खाना**
    - महान कवि
    - अब्दुर्रहीम खान-खाना बैरम खाँ का पुत्र था तथा जहाँगीर का शिक्षक था। उसने तुर्की भाषा में प्रणीत बाबरनामा का फारसी में अनुवाद किया।
    - वह फारसी, अरबी, तुर्की ही नहीं बल्कि संस्कृत, हिन्दी तथा राजस्थानी का भी ज्ञाता था।
    - जन्म से मुसलमान था लेकिन भगवान कृष्ण का भक्त।
9. **मिर्जा अजीज कोका**
    - खान-ए- आज़म
    - प्रमुख रईसों में से एक।
    - सूबेदार के रूप में सेवा की।

अकबर के अधीन प्रशासन

- **सल्तनत और शेर शाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था को बरकरार** रखा ।
- अत्यधिक **केंद्रीकृत शासन था**
- **जागीर**
    - **खालसा** (वह आय जो सीधे राजकोष में जाती थी)
    - **इनाम** (विद्वानों और धार्मिक पुरुषों को दी गई भूमि)।

A. केंद्रीय प्रशासन

राजा

- प्रशासन के **सर्वोच्च प्रमुख।**
- सभी **सैन्य और न्यायिक शक्तियों को नियंत्रित** करता था।
- **वज़ीर**
    - वजीरों की स्थिति **मुगलों के अधीन पुनर्जीवित** हो गई, वे विभिन्न विभागाध्यक्ष कार्य करते थे।
    - **शासक और प्रशासन** के बीच **प्रमुख कड़ी।**
    - राजस्व विभाग का प्रमुख **वज़ीर** बना रहा और **दीवान या दीवान-ए-आला की उपाधि** रखने वाले राजस्व मामलों के विशेषज्ञ।
    - सभी विभागों में सभी **लेन-देन और भुगतान का निरीक्षण** करता था
- **मीर बख्शी**
    - सैन्य प्रशासन का प्रमुख, जिसे **कुलीनों का प्रमुख भी माना जाता** है।
    - मनसबों में नियुक्ति या पदोन्नति सम्राट के द्वारा **उसके समर्थन के बाद ही की जाती थीं।**
    - साथ ही सा**म्राज्य की खुफिया और सूचना एजेंसियों के प्रमुख।**
    - **बरीद (खुफिया अधिकारी) और वक़िया-नवीस (समाचार पत्रकार)**
    - **सशस्त्र टुकड़ियों** और **युद्ध उपकरणों के उचित रखरखाव** पर **कड़ी नजर** रखता था ।
- **मीर सामन**
    - **शाही घराने और शाही कारखानों के प्रभारी** अधिकारी थे ।
    - उपयोग के लिए **सभी प्रकार की खरीद और शाही घराने के लिए उनके भंडारण के लिए जिम्मेदार** थे।

- दरबार में **शिष्टाचार का पालन, शाही अंगरक्षकों पर नियंत्रण** करना आदि सभी उनकी देखरेख में थे।
- **काजी/सद्र-उस-सुद्दर**
  - **न्यायिक विभाग का नेतृत्व** किया।
  - **शरीयत** के कानूनों **के अनुसार न्याय** करना और **धार्मिक बंदोबस्ती के लिए भी जिम्मेदार** थे।
- **इनाम अनुदान**
  - सभी व्यक्तियों को दिया जा सकता था, चाहे वे किसी भी धर्म के हो ।
  - अकबर ने यह नियम बनाया कि **इनाम भूमि के आधे हिस्से में खेती योग्य बंजर भूमि होनी चाहिए** ताकि **खेती का विस्तार** किया जा सके।
- **मुहतासिब**
  - **सार्वजनिक नैतिकता के नियमों** के **सामान्य पालन को सुनिश्चित** करने के लिए **जिम्मेदार** ।
  - **बाटों और मापों की जांच** करना और **उचित मूल्य** को **लागू** करवाना।
- **कुलीन**
  - कुलीनों में **तुर्क, अफगान, फारसी, हिंदुस्तानी, या शेखजादा** (भारतीय मुसलमान), या **हिंदू राजपूत** शामिल थे।

B. प्रांतीय प्रशासन-

- अकबर द्वारा साम्राज्य को **बारह सूबों या प्रांतों में विभाजित** किया गया था।
  - इलाहाबाद, आगरा, अवध, अजमेर, अहमदाबाद, बिहार, बंगाल, दिल्ली, काबुल, लाहौर, मालवा और मुल्तान।
  - बाद में अहमदनगर, बरार और खानदेश को जोड़ा गया।
- **साम्राज्य का क्षेत्रीय विभाजन** : सूबा → सरकार → परगना → गाँव
  - **सूबा** (प्रांत) -सूबेदार (राज्यपाल) के अधीन होता था ।
  - **फौजदार**- कानून और व्यवस्था को देखता था इसके साथ यह सरकार (जिला) के भू-राजस्व, अमलगुजार लेने का कार्य भी करता था ।
  - **परगना** (उप जिला)- शिकदार के अधीन होता था ।
  - **मुकद्दम** के अधीन गांव होता था ।

भूमि राजस्व

- मोटे तौर पर **शेरशाह की प्रणाली पर आधारित** था।
- **जब्ती या बंदोबस्त प्रणाली**, जिसे राजा टोडर मल द्वारा और बेहतर बनाया गया था।
  - क्षेत्र को लोहे के छल्ले से जुड़े बांस का उपयोग करके मापा गया था
  - **राजस्व - औसत उपज का 1/3 भाग** लिया जाता था और ज्यादातर **नकद में भुगतान** किया जाता था।
- **1580 ई. में, अकबर ने दहसाला प्रणाली की शुरुआत की**
  - पिछले दस वर्षों के आधार पर निर्धारित **भूमि की औसत उपज पर राजस्व का निर्धारण** किया जाता था।
- **अकबर के शासन में अन्य मूल्यांकन प्रणाली:**
  - **बटाई या गल्लाबख्शी -** किसानों और राज्य के बीच निश्चित अनुपात में विभाजित उपज।
  - **नसक या कंकुट -** मोटे तौर पर मूल्यांकन फसलों के निरीक्षण के आधार पर और पूरे गांव द्वारा किए गए पिछले भुगतान के आधार पर किया जाता था।
- **उर्वरता के आधार पर भूमि का विभाजन किया गया -**
  - **पोलज-** वह भूमि जिसमे हर साल खेती की जाती थी।
  - **परती भूमि -**दो साल में एक बार खेती की जाती थी।
  - **चाचर-** तीन या चार साल में एक बार खेती की जाती थी।
  - **बंजर-** पांच या उससे अधिक वर्षों में एक बार खेती की जाती थी।
- **करोड़ी -**
  - **एक करोड़ दाम** (2,50,000 रुपये) के संग्रह के लिए **जिम्मेदार अधिकारी।**
  - **कानूनगो-** भूमि रिकॉर्ड रखने वाला स्थानीय वंशानुगत अधिकारी।जैसे वर्तमान समय में पटवारी
- किसानों को बीज, औजारों, जानवरों आदि के लिए जरूरत के लिए **तकावी ऋण** दिया जाता है।
- 17वीं शताब्दी में 2 नई फसलें, **तंबाकू और मक्का की भी खेती की गयी ।**
- 18वीं सदी में **आलू और लाल मिर्च की खेती का विस्तार** हुआ ।
- इस अवधि के दौरान **कोई नई कृषि तकनीक नही** थी।
- **किसान** जो अपनी जोत की जमीन के **मालिक** थे - **खुदकाश्त** कहलाते थे

मनसबदारी प्रणाली

- एक प्रशासनिक प्रणाली थी जिसे **अकबर ने आरम्भ** किया था।
- 'मनसब' **मूलतः अरबी शब्द** है जिसका अर्थ 'पद' या 'रैंक' है।
  - मनसब शब्द, **शासकीय अधिकारियों तथा सेनापतियों का पद निर्धारित** करता था।
  - सभी **सैन्य तथा असैन्य अधिकारियों की मनसब निश्चित** की जाती थी जो अलग-अलग हुआ करती थी।
- प्रत्येक **अधिकारी (मनसबदार) को एक पद (मनसब**) दिया जाता था।
- **निम्नतम रैंक 10 थी** और **अमीरों के** लिए **उच्चतम 5,000** थी।
- **वंशानुगत नहीं था** ।
- **मंसब दो प्रकार के होते थे**, 'जात' और 'सवार'। -
  - **जात -** 'जात' से तात्पर्य मंसबदार की उस **स्थिति** से था जो उसे **प्रशासकीय पदश्रेणी में प्राप्त** थी। उसका **वेतन** भी उसी अनुपात में उन वेतन सूचियों के आधार पर जो कि उस समय लागू थीं निर्धारित होता था

- **सावर - घुड़सवार (सवार) की संख्या को इंगित** करता था। अथवा सवार श्रेणी से अभिप्राय था कि कितना सैनिक दल एक **मंसबदार को बनाए रखना** है; और इसके लिये उसे कितना वेतन मिलेगा। इसका निर्धारण **प्रचलित वेतनक्रम को सवारों की संख्या से गुणा करके** होता था।

मनसबदारों का श्रेणियों में विभाजन

अकबर ने जात और सवार मनसबदारों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था –

1. जिस व्यक्ति को **जितना अधिक ऊँचा जात (व्यक्तिगत) मनसब** दिया जाता था, वह **उतने ही अधिक घुड़सवार** रखने का अधिकारी भी होता था और उसे **प्रथम श्रेणी का मनसब** कहा जाता था। अकबर के काल में **सबसे छोटा या निम्न मनसब (पद) दस सिपाहियों के ऊपर अधिकार** रखने का था और **उच्चतम दस हजार घुड़सवारों पर अधिकार** रखने का था। बाद में **अकबर ने उच्चतम** मनसब की **सीमा बढ़ाकर 12 हजार** कर दी थी।
2. जो मनसबदार अपने **जात (व्यक्तिगत) से आधी संख्या या आधे से अधिक घुड़सवार** रख सकता था, वह **दूसरी श्रेणी का मनसबदार** होता था।
3. जिस मनसबदार को अपने **जात (व्यक्तिगत पद) से आधे से कम घुड़सवार** रखने का अधिकार था, उसे **तीसरी श्रेणी का मनसबदार** कहा जाता था।इस श्रेणी में **सवार पद , जात पद (7000/3000) के पचास प्रतिशत** से कम था।

- **500 जात वाले को - मनसबदार**
- **500 - 2500 जात को - अमीर,**
- **≥ 2500 - अमीर-ए-उमदा या उम्दा-ए-आज़म।**

- सभी **मनसबदारों को एक घुड़सवार के लिए दो घोड़े रखने अनिवार्य** होते थे
- किसी भी मनसबदार को जात पद के अनुसार ही सवार रखने की अनुमति थी

मनसबदारी प्रणाली और इक्तादारी प्रणाली के बीच अंतर

मनसबदारी व्यवस्था	इक्तादारी व्यवस्था
• **मुगल शासकों द्वारा** इस्तेमाल किया गया • **भूमि सम्राटों की** थी • राजस्व संग्रह के अलावा **कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी** थी • **वंशानुगत नहीं**	• **दिल्ली सल्तनत** के शासकों **द्वारा** उपयोग किया गया • भूमि को **दो भागों में विभाजित** किया गया- एक **इक्तादारों** का था और दूसरा **सम्राट का** था • **राजस्व संग्रह और वितरण के प्रभारी अधिकारी।** • बाद में **वंशानुगत** हो गया

जागीरदारी प्रणाली

- **नकद वेतन के बदले** किसी व्यक्ति को **भूमि** का एक टुकड़ा सौंपना जिसके माध्यम से वह **राजस्व आदि वसूल** कर सकता था ।
- दिल्ली सल्तनत में इस तरह की व्यवस्था **इक्ता और इक्तादार के रूप में थी।**
- **बाबर और हुमायूँ** के काल में **'वजाह'** तय करके **वजाहदारों के माध्यम से राजस्व का संग्रह** किया जाता था।
- **अकबर के काल में** क्षेत्र मोटे तौर पर **खालसा और जागीर के रूप में विभाजित** किया गया ।
- **खालसा क्षेत्र** से **राजस्व एकत्र करके शाही खजाने में जमा** किया जाता था।
- पद के अनुसार, **जागीरदार को वेतन के बदले में राजस्व का संग्रह** सौंपा गया था।
- **मनसबदारों** को उनके **पद के आधार पर क्षेत्र** दिया जाता था ।
- **क्षेत्र से अनुमानित राजस्व** को **'जामा ओजमदारी'** कहा जाता था**,** इसकी गणना 'दाम ' (छोटे तांबे के सिक्के) में की जाती थी।
- इसमें **भू-राजस्व, अंतर्देशीय पारगमन शुल्क, बंदरगाह सीमा शुल्क** और **अन्य कर** भी शामिल थे ।
    - **सैर जिहात' और 'हसील'** -वसूल की जाने वाली राजस्व की राशि को कहते है ।
- **जागीरों या राजस्व के प्रकार।**
    - **जागीर तन्खा-** वेतन के बदले दिया जाता था , यह हर तीन या चार साल में हस्तांतरणीय होता था
    - **मशरुत जागीर -**किसी व्यक्ति को कुछ शर्तों पर दिया जाता है,
    - **इनाम जागीर**- सेवा के दायित्वों में शामिल नहीं होना और रैंक से स्वतंत्र
    - **वतन जागीर** -जमींदारों को उनकी मातृभूमि में सौंपी गयी जागीर, यह वंशानुगत जागीर और अहस्तांतरणीय होती थी।
    - **अलतमगा जागीर-** मुस्लिम रईसों को उनके परिवार के कस्बों या जन्म स्थान पर दिया जाता है
- **जमींदार:** जमीदारो का भूमि की उपज पर **वंशानुगत अधिकार था** और किसानों की उपज में प्रत्यक्ष हिस्सेदारी लेते थे - यह **देश के विभिन्न हिस्सों में 10% - 25% होती थी** ।
    - **जमीदारो ने भू-राजस्व के संग्रह में** राज्य और जागीरदार की सहायता की।
    - **किलों या गढ़ियों में रहते थे,** जो प्रतिष्ठा का प्रतीक थे।
    - अपनी ज़मींदारी वाली सारी ज़मीनों का **'मालिक'** नहीं थे क्योकि जिन **किसानों ने वास्तव में भूमि पर खेती की थी,** उन्हें तब तक **बेदखल नहीं किया जा सकता था जब तक वे भू-राजस्व का भुगतान करते थे।**

नस्क प्रणाली

- **मुगल साम्राज्य** में व्यापक रूप से प्रचलित थे , **विशेषकर बंगाल** में थे ।
- इस प्रणाली में मोटे तौर पर किसानों की **पिछली राजस्व प्राप्तियों के आधार पर गणना** की गई थी।

अकबर की धार्मिक नीति

- **अकबर के धार्मिक विचार किससे प्रेरित थे :**
  - अकबर का **सूफी संतों** के साथ बचपन से संपर्क था।
  - उनके शिक्षक **अब्दुल लतीफ** की शिक्षाएँ ।
  - **राजपूत महिलाओं** के साथ **विवाह** ।
  - **शेख मुबारक** जैसे बौद्धिक विद्वान का प्रभाव ।
- अकबर एक **धर्मपरायण मुसलमान** था।
- अजमेर में **शेख मुइनुद्दीन चिश्ती** की दरगाह का **नियमित रूप से दौरा** करता था।
- **आमेर की जोधा बाई से शादी** करने के बाद, तीर्थ कर को समाप्त कर दिया और **1562 ई. में,जजिया को भी समाप्त** कर दिया।
- अकबर ने अपनी **हिंदू पत्नियों को अपने देवताओं की पूजा करने की अनुमति** दी।
- अकबर ने 1575 ई. में अपनी **नई राजधानी फतेहपुर सीकरी** में **इबादत खाना (प्रार्थना घर)** का **निर्माण** किया, जिसमें अकबर ने हिंदू धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म और पारसी धर्म जैसे सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित किया और उनके साथ धार्मिक विचार-विमर्श किया।
- **उस काल के कुछ विद्वान:**
  - **पुरुषोत्तम दास** - हिंदू
  - **दस्तूर महरजी राणा -** पारसी (नवसारी के)
  - **हीर विजया सूरी -** काठियावाड़ी के जैन संत
  - **एक्वाविवा और मोनसेरेट - ईसाई (इनको अकबर के अनुरोध पर पुर्तगालियों द्वारा भेजा गया)**
- अकबर **राजनीतिक मामलों में मुस्लिम उलेमाओं के हस्तक्षेप को नापसंद** करते थे।
- **1579ई. - "अचूकता का फरमान "** जारी किया जिसके द्वारा उन्होंने अपनी **धार्मिक शक्तियों का दावा किया।**
- **1582 ई. - दीन-ए-इलाही/तौहिंदी-इलाही (ईश्वरीय एकेश्वरवाद)** नामक एक नए धर्म का प्रचार किया, जो एक ईश्वर और सभी के लिए **सुलह /शांति में विश्वास करता था।**
  - सभी **धर्मों के अच्छे बिंदुओं को समाहित** किया ।
  - उनकी **मौत के बाद** प्रमुख **अनुयायी**: बीरबल, अबुल फजल और अबुल फैजी।

अकबर के अधीन साम्राज्य का विस्तार

- **अकबर ने बहुत ही व्यवस्थित नीति से साम्राजय को फैलाया ।**
- बैरम खान को हटाने के बाद अकबर का पहला कदम था अपने **राजदरबार में अभिजात्य वर्ग से संघर्ष को समाप्त** करना। इसके नियंत्रण के लिए उसने **अत्यंत कूटनीतिक कौशल और संगठनात्मक योग्यताओ का प्रदर्शन** किया।
- अपनी विस्तार की नीति की **शुरुआत** उसने **मध्य भारत से** की।
- **1559-60ई. में** अकबर ने अपने **पहले अभियान दल** को मालवा की तरफ बढ़ने से पूर्व ग्वालियर को जीतने के लिए भेजा ।
- मध्य भारत में **मालवा** पर उस समय **बाज बहादुर का शासन** था । इसके विरुद्ध लड़ाई के अभियान पर अकबर ने **आधम खान को तैनात किया** ।
- **बाज बहादुर हार गया** इसके बाद गोंडवाना राजवंश में दलपत शाह की विधवा रानी **दुर्गावती को पराजित किया** और गोंडवाना को अकबर ने 1564 में **मुग़ल साम्राज्य में शामिल कर लिया ।**

1. **राजपुताना की विजय**

- अकबर एक **व्यावहारिक शासक था** ।
- अकबर यह महसूस करने वाला **पहला मुस्लिम शासक था** कि राजपूतों की मदद के बिना भारत में कोई स्थायी साम्राज्य स्थापित नहीं किया जा सकता था।
- **अकबर की राजपूत नीति**
  - **अकबर ने चित्तौड़, मेड़ता, रणथंभौर, कालिंजर के किले** जैसे राजपूतों के मजबूत किलों पर कब्जा कर लिया
    - **1562 ई. - मेड़ता के किले पर कब्जा कर लिया जो जयमल के अधीन था ।**
    - **1568 ई.- मेवाड़ से चित्तौड़ छीन लिया गया**
    - **1569 ई. - राजा सुरजन राय को रणथंभौर के किले को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया गया था।**
    - **1569 ई.- राजा रामचंद्र ने स्वेच्छा से कालिंजर का किला अकबर को सौंप दिया।**
  - इस प्रकार उसने **राजपूतों की शक्ति को कमजोर कर** दिया।
  - **राजपूत शासक जिन्होंने** या तो उनकी **संप्रभुता को स्वीकार कर** लिया या स्वेच्छा से उनके साथ वैवाहिक संबंध बनाये ,इस प्रकार वे अपने **राज्यों के स्वामी बने रहे ।**
    - राज्य में **उच्च पद** दिए गए और उनके **प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं** था ।
  - उनके **प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं** था।
  - **सम्राट को वार्षिक धनराशि** अर्पित करते थे ।
    - **1562** में आमेर के राजा भारमल
  - **अकबर का विरोध** करने वाले **राजपूत शासकों पर हमला किया गया** और उन्हें अपनी संप्रभुता स्वीकार करने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया गया।
    - **मेवाड़** इसका सबसे अच्छा उदाहरण था।
  - **चित्तौड़ के किले के पतन के बाद बीकानेर और जैसलमेर** जैसे कुछ राजपूत राज्यों ने स्वे**च्छा से अकबर का आधिपत्य स्वीकार** कर लिया, जबकि उनमें से कुछ ने उसके साथ **वैवाहिक सम्बन्ध बनाये**

- **हल्दीघाटी की लड़ाई** के बाद **बांसवाड़ा, बूंदी** और **ओरछा ने अकबर का आधिपत्य स्वीकार** कर लिया
- **राजपूत नीति** - एक बड़ी सफलता।
  - **मेवाड़ को छोड़कर** सभी **राजपूत राज्यों ने अकबर की संप्रभुता को स्वीकार** कर लिया।

2. गुजरात की विजय

- **1572 ई**. में अकबर ने **गुजरात पर आक्रमण** किया।
- एक छोटी सी लड़ाई के बाद **अहमदाबाद पर मुगलों का कब्जा** हो गया था।
- **मुजफ्फर खान** और उसके **अमीरों ने अकबर के सामने आत्मसमर्पण** कर दिया।
- इस प्रकार **अकबर ने खम्बात की खाड़ी तक** के क्षेत्र पर **कब्जा** कर लिया
- सरनाल में **अकबर ने इब्राहिम मिर्जा** को पराजित किया
- लौटते समय **सूरत के किले पर कब्जा** कर लिया।
- इसके बाद **खान-ए-आजम (मिर्जा अजीज खान कोका) को गुजरात का राज्यपाल** नियुक्त किया
- **मुहम्मद हुसैन मिर्जा ने 1573 ई.** में **विद्रोह किया** लेकिन **अकबर** ने विद्रोह को **दबा दिया**

3. पूर्वी भारत की विजय

- **दाउद के अधीन बंगाल और बिहार पर अफगानों का शासन था |**
  - **1574 ई**. - अकबर, मुनीम खान और खान-ए खान के साथ बिहार की ओर बढ़ा।और कुछ ही समय में **हाजीपुर और पटना** पर कब्जा कर लिया गया।
  - परिणाम स्वरुप **दाऊद भाग गया**,लेकिन उसने **फिर से विद्रोह** किया और **खान-ए-जहाँ के अधीन मुगल सेना द्वारा मारा** गया।
- **उड़ीसा के कुछ हिस्से अफगान प्रमुखों के अधीन थे।**
  - **1592 ई** . के आसपास, **मानसिंह** ने पूरे **उड़ीसा को मुगल शासन के अधीन** कर लिया।

उत्तर- पश्चिमी भारत, काबुल (1581 ई.) की विजय

- अकबर के **काबुल अभियान** के समय काबुल शासक **हकीम मिर्ज़ा** था |
- काबुल विजय के बाद **अकबर ने हकीम मिर्ज़ा को हटाकर** उसकी बहन **बख्नुनन्निशा बेगम** को यहां का **सूबेदार** बनाया, हालाँकि अकबर के लौटते ही **हकीम मिर्ज़ा काबुल में पुनः प्रभावशील** हो गया |
- हकीम मिर्ज़ा की मृत्यु के बाद काबुल को मुग़ल साम्राज्य में मिलाकर **मानसिंह को वहां का सूबेदार** नियुक्त किया गया।
- उल्लेख मिलता है की **पुर्तगाली विद्वान् मोंसरेट** भी इसी अभियान पर **अकबर के साथ** गया था।

4. कश्मीर की विजय

- **राजा भगवान दास और शाह कुली महरम** के अधीन एक सेना भेजी गई |
- **युसूफ खान और कश्मीर के राजा हार** गए और उन्होंने **मुगलों की आधिपत्य स्वीकार कर लिया।**
- यूसुफ के बेटे **याकूब** ने कुछ **अमीरों के साथ मुगलों का विरोध किया** और **युद्ध छेड़ दिया** लेकिन अंतत **1586 में कश्मीर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया** गया था |

5. थट्टा (सिंध) की विजय

- **खान-ए-खाना को मुल्तान का सूबेदार** नियुक्त किया
- उसे **सिंध,बलोच पर विजय प्राप्त** करने के लिए कहा।
- **थट्टा पर मुगलों ने कब्जा** कर लिया गया।

6. दक्कन और दक्षिण भारत की विजय

- **1591ई. - अकबर ने दक्कन के राज्यों में मुगल संप्रभुता को स्वीकार करने के लिए कुछ मिशन भेजे।**
  - **असीरगढ़ और बुरहानपुर** (खानदेश) - फ़ैज़ी
  - **अहमदनगर**- ख्वाजा अमीनुद्दीन
  - **बीजापुर** - मीर मोहम्मद अमीन मशदी
  - **गोलकुंडा** - मिर्जा मसूद
- **1593 ई.** में सभी मिशन **बिना किसी सफलता के लौट** आए
- **राजकुमार मुराद और अब्दुल रहीम खान-ए-खाना** के नेतृत्व में **अभियान अहमदनगर** भेजा गया।
  - **1595 ई.**, मुगल सेना ने **अहमदनगर को घेर लिया।**
- 1600 ईस्वी में **असीरगढ़** और **आसपास के क्षेत्रों पर विजय** प्राप्त की गई थी।
- बीजापुर के **आदिल शाह** ने भी **निष्ठा व्यक्त की** और **राजकुमार दनियाल** से अपनी की।
- दक्कन में मुगल क्षेत्रों में **असीरगढ़, बुरहानपुर, अहमदनगर और बरार** शामिल हो गए।

अकबर के तहत साहित्यिक कार्य

- **अकबर ने अनुवाद विभाग की शुरुवात** की थी। इसलिए **महाभारत, रामायण, अथर्व वेद, भगवत गीता और पंचतंत्र का अनुवाद संस्कृत से फारसी भाषा** में संभव हो पाया था।
- **मुल्ला अब्दुल कादिर बदायुनी ने रामायण और सिंघासन बत्तीसी को फारसी भाषा** में अनुवाद किया था।
- **फैजी ने पंचतंत्र का फारसी भाषा** में अनुवाद किया था।
- **अथर्व वेद** का अनुवाद **इब्राहिम सरहिंदी ने** किया था।
- राजतरंगिणी का अनुवाद **मौलाना शाह मोहम्मद शाहाबाद** ने किया था।
- **अबुल फ़जल ने आईन-ए-अकबरी और अकबर नामा की** रचना की थी।
- अकबर ने अपने शासनकाल में, **भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी हिस्सों पर आधिपत्य** स्थापित कर लिया था।
- अकबर ने अपने शासनकाल के दौरान, बहुत से **प्रशासनिक तथा सैन्य सुधार** किये थे जैसे **मंसबदारी प्रणाली, सेना में तोप और हाथियों का व्यापक रूप से इस्तेमाल, किलाबंदी के तरीके इत्यादी।**

- उन्होंने ने **फसल उपज पर आधारित कर** पर एक नई **निष्पक्ष प्रणाली** की शुरुवाती की थी।
    - वह **वास्तुकला, कला और साहित्य का एक महान संरक्षक था।**
    - इसलिए, **अकबर के काल को 'फारसी साहित्य के पुनर्जागरण'** के रूप में जाना जाता है।

अकबर की मृत्यु

- अकबर **मुगल वंश का सबसे महान शासक** था
- अकबर ने दक्षिण भारत में, **दक्कन के दक्षिणी भाग को छोड़कर सम्पूर्ण भारत पर विजय** प्राप्त की
- **कंधार, 1594 ईस्वी में मुग़ल साम्राज्य** का हिस्सा बना, जबकि कश्मीर 1587 ईस्वी में
- 1585 ईस्वी में उसके **सबसे करीबी सहायक बीरबल की अफगान विद्रोह के दौरान हत्या** कर दी गयी
- **1595** ईस्वी में अकबर के कवि **दोस्त फैजी की मृत्यु** हो गई
- अकबर ने स्वयं अहमदनगर के **मुग़ल अभियान का नेतृत्व** किया।
    - उस समय **अहमदनगर की शासिका चाँद बीबी** ने **अहमदनगर की सेना का नेतृत्व** किया था ।
- जब अकबर **दक्कन के अभियान में व्यस्त** था उसी समय उसके पुत्र जहाँ**गीर ने उत्तर भारत में विद्रोह कर दिया** और अकबर के सबसे **प्रिय नवरत्नों में से एक अबुल फज़ल की हत्या** करवा दी ।
- इस घटना के बाद **अकबर बहुत दुखी** हुआ और उसके बाद उसका **स्वास्थ्य दिन-ब-दिन गिरता चला गया**.
- **1605 ई. - अकबर** की पेचिश से **मृत्यु** हो गई और उसे **सिकंदरा** में **दफनाया गया।**

जहाँगीर (1605-1627 ई.)

- अकबर का **एकमात्र जीवित पुत्र** जो अपने **पिता की मृत्यु के बाद 34 वर्ष की आयु में गद्दी पर** बैठा।
- उसने अपने ही बेटे **खुसरो को अंधा करवा दिया ।**
- **जहाँगीर** में अपने पिता जैसी **वीरता और प्रशासनिक प्रतिभा** का अभाव था।
- **जहाँगीर कला और साहित्य के महान संरक्षक था उसने** शानदार इमारतों, उद्यानों और मकबरे का निर्माण करवाया।
- उसके शासन काल में **मुगल चित्रकला चरम** पर पहुंच गई।
- **अकबर का मकबरा, इदमात उद दौला मकबरा** और **प्रसिद्ध जहाँगीर किला** का निर्माण करवाया।
- जहाँगीर ने **"नूरजहाँ" से शादी** की जो एक युवा विधवा थी ।
    - **नूरजहाँ** एक बहुत ही **बुद्धिमान महिला** थी जो अपने पति की कमजोरियों को समझती थी और धीरे-धीरे उसने शासन प्रणाली पर पकड़ बना ली ।
- **जहाँगीर और मेवाड़** के तात्कालीन राजा, **राणा अमर सिंह** के मध्य **1605 इस्वी से 1615 ई .** तक लगभग **18 युद्ध लड़े** गए और इसके बाद हुई **संधि को जहाँगीर की बड़ी उपलब्धि** माना जाता है
- **बर्मा, कांगड़ा, दक्कन और अहोमों** के खिलाफ **अभियानों का नेतृत्व** भी **जहाँगीर ने किया**।
- सिखों के साथ **जहाँगीर की दुश्मनी** थी उसने शीशगंज में सिखों के पांचवें गुरु का सिर कलम करवा दिया।
- उसके शासन काल में में **व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि हुई**
- उसके काल में **पुर्तगालियों को भारत के दक्षिणी क्षेत्रों में प्रवेश करने से रोका** गया
- **उस समय निर्यात की जाने वाली मुख्य वस्तु भारतीय शराब थी ।**
- जहाँगीर **शराब की लत** में इस तरह डूबा कि इतिहासकारों ने उसे **मिट्टी का माधव** कहा
- **जहाँगीर के शासन की कमजोरियों से** फारसी और उज्बेक्स पूरी तरह से अवगत थे।
- जहाँगीर की **मृत्यु नवंबर 1627ई.** में हो गयी।

शाहजहाँ (1628-1658 ई.)

- **उत्तराधिकार की लड़ाई में राजकुमार खुर्रम सिंहासन प्राप्त** करने में सफल रहे और उन्होंने **शाहजहाँ की उपाधि** धारण की ।
- **शाहजहाँ** ने **दक्कन** के **राज्यों के खिलाफ सफल अभियान** चलाये ।
- **1636ई.** तक, **अहमदनगर पर कब्जा कर लिया**, इसके साथ **गोलकुंडा और बीजापुर को** अपनी अधीनता स्वीकारने के लिए मजबूर किया।
- दक्कन में, शाहजहाँ ने चार मुगल प्रांत बनाये **खानदेश, बरार, तेलंगाना और दौलताबाद।**
- **शाहजहाँ ने** उत्तर-पश्चिम में भी मुगल सत्ता का विस्तार किया और **1638ई. में कंधार के फारसी गवर्नर अली मर्दन खान ने किले को मुगलों को सौंप दिया।**
- **1632 ईस्वी में** शाहजहाँ ने व्यापारिक विशेषाधिकार के दुरुपयोग के कारण हुगली के पास पुर्तगालियों को पराजित किया।
- **1648ई. में अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित** कर दिया, वहां **शाहजहांनाबाद नामक नया शहर बसाया।**
- शाहजहा ने **बल्ख और बदख्शां के खिलाफ अभियान** चलाये और **कंधार** को फिर से **प्राप्त करने का प्रयास** किया **परिणामस्वरूप** उसके इन प्रयासों से, **साम्राज्य को दिवालियेपन के कगार पर ला दिया।**
- उसके शासनकाल में भारत आने वाले **विदेशी यात्री:**
    - फ्रांसीसी यात्री- **बर्नियर और टैवर्नियर**

- इतालवी यात्री - **मनूची**
- **पीटर मुंडी** ने शाहजहाँ के शासन काल में अकाल का वर्णन किया।

कला और संस्कृति

- अपनी पत्नी **अर्जुमंद (मुमताज़ महल) की याद में ताजमहल** का **निर्माण** करवाया जिसमे **सजावट** की **पित्रा दूरा शैली** का प्रयोग किया गया है, ताजमहल में चबूतरे को मुख्य भवन से जोड़ने वाली **विशाल गुम्बद और पतली मीनारों का प्रयोग** किया गया है

> **पित्रा दूरा**
> - एक **सजावटी कला।**
> - चित्र बनाने के लिए, पॉलिश किए गए **रंगीन पत्थरों का उपयोग** किया जाता था।
> - पत्थर से पत्थर को इस प्रकार जोड़ा गया है कि **एक ही टुकड़ा दिखाई देता** है।
> - इस प्रकार की शैली का **पहली बार** प्रयोग **16 वीं शताब्दी में रोम में** किया गया ।

- **शाहजहाँ के शासन काल में** मस्जिदों ,इमारतो आदि की **स्थापत्य कला अपने** चरमोत्कर्ष पर पहुंची जैसे;
  - आगरा किले में मोती मस्जिद
  - आगरा के किले में दीवाने आम और दीवाने खास
  - दिल्ली का लाल किला
  - दिल्ली में जामा मस्जिद,
  - शालीमार गार्डन
  - इसके अलावा काबुल ,कंधार ,अजमेर आदि शहरों में अनेक महल ,इमारते बनवाये
- प्रसिद्ध **मयूर सिंहासन** के निर्माण भी **शाहजहाँ** ने करवाया
- **पुरानी दिल्ली** की स्थापना **1639ई. में शाहजहानाबाद** के नाम से हुई थी।यह शहर **चारो ओर दीवारों से घिरा हुआ** था
- **बादशाहनामा** के लेखक **अब्दुल हमीद लाहौरी** और शाहजहाँनामा के लेखक **इनायत खान** जैसे कई लेखकों और इतिहासकारों को भी संरक्षण दिया।
- **शाहजहाँ** के **पुत्र दारा शिकोह** ने भगवद गीता और उपनिषदों का **फारसी भाषा** में **अनुवाद** किया

उत्तराधिकार

- 1657 ई. में शाहजहाँ की अचानक बीमारी से उसके **चार बेटों के बीच एक गृहयुद्ध (1657-59 ई.)** शुरू हो गया :
  - **दारा शिकोह**, शाहजहाँ का **सबसे बड़ा पुत्र** था जिसे **शाहजहाँ द्वारा सबसे ज्यादा पसंद किया जाता** था; वह **दिल्ली में स्थित** था जिसका **समर्थन जहाँआरा** ने किया ।
  - उस समय **शाह शुजा, बंगाल का (गवर्नर) सूबेदार** था।
  - **औरंगजेब,** दक्कन का गवर्नर था जिसे **बहन रोशनारा** का समर्थन प्राप्त था।
  - **मुराद बख्श** ,मालवा और गुजरात का (गवर्नर) सूबेदार था।
- **शाहजहाँ** की **मृत्यु** की खबर सुनते ही **शुजा ने खुद को बादशाह घोषित** कर दिया, लेकिन वह दारा शिकोह के बेटे **सुलेमान शेख** (मिर्जा राजा जय सिंह की सहायता मिली) **से हार गया।**
- औरंगजेब और मुराद दोनों ने **जोधपुर के** राजा **जसवंत सिंह और कासिम खान को धरमत की लड़ाई (1658 ई**. में) में हराया।
- **निर्णायक युद्ध- सामूगढ़ की लड़ाई** (1658ई.) औरंगजेब और दारा के बीच लड़ी गई थी जिसमें **दारा शिकोह हार गया**
- **औरंगजेब ने** खुद को **'आलमगीर' (दुनिया के विजेता) की उपाधि** से नवाजा,और दिल्ली के सिहासन पर बैठा लेकिन **गृहयुद्ध दो साल से अधिक समय तक जारी** रहा।
- **1658 ई**.में इलाहाबाद के पास **खजवा की लड़ाई, औरंगजेब और शुजा के बीच** लड़ी गई जिसमें **औरंगजेब** फिर से **विजयी** हुआ।
- **देवराई की लड़ाई (1659ई.)** - आखिरी बड़ी लड़ाई **दारा ने औरंगजेब के खिलाफ लड़ी** जिसमें पुनः दारा की हार हुई और उसे **मोंत के घाट उतार दिया।**
- **देवराई का युद्ध** के बाद **औरंगजेब का दूसरा राज्याभिषेक** हुआ।
- इसके बाद **औरंगजेब ने आगरा के किले में शाहजहाँ को बंदी बना लिया**, जहाँ **1666ई. में उनकी मृत्यु** तक उनकी बेटी जहाँआरा ने उनकी देखभाल की
- **शाहजहाँ को** ताजमहल में उनकी **पत्नी की कब्र के पास दफनाया गया।**

औरंगजेब (1658-1707 ई.)

- **औरंगजेब ने बीजापुर (1686ई.) और गोलकुंडा (1687ई.)** को अपने कब्जे में लेने के बाद, **साम्राज्य** का **सबसे बड़ा विस्तार किया।**
- **औरंगजेब धार्मिक असहिष्णु शासक था** ।
- शासक बनने के बाद **औरंगजेब ने अपने विजय अभियानों को जारी रखा**
- **मराठा शासक शिवाजी को 1666ई. में अपने अधीन किया और** जागीरदार होने के लिए मजबूर किया। लेकिन शिवाजी **मुगल दरबार से भाग निकले** और मुगल साम्राज्य को **नए सिरे से चुनौती** दी।
- **औरंगजेब ने** हिंदुओं को **मुग़ल दरबार से बाहर** कर दिया और उनके **स्कूलों , मंदिरों को नष्ट कर दिया।**
- **24 नवंबर 1675ई.** को भारी भीड़ के सामने **गुरु तेग बहादुर का सिर काट दिया** गया।
- औरंगजेब द्वारा लगाए गए **भारी करों** ने **किसानो को गरीब बना दिया।** उसने **जजिया** को **फिर से लागू** कर दिया
- औरंगजेब की **मृत्यु 1707ई.** में हो गयी
- इतिहासकार **जे.एन. सरकार** ने **औरंगजेब के पतन के बारे में कहा** -जिस प्रकार स्पेन के फोड़े ने नेपोलियन का विनाश कर दिया उसी प्रकार दक्षिण के फोड़े ने औरंगजेब का विनाश कर दिया।

औरंगजेब की दक्कन नीति

- मराठों के **बढ़ते प्रभाव** को **रोकना**
- **गोलकुंडा और बीजापुर जैसे दक्कन के शिया राज्यों के** विद्रोही रवैये पर नियंत्रण रखना
- बेटे अकबर की **विद्रोही गतिविधियों पर नियंत्रण रखना।**
- **औरंगजेब 1682 ई. में दक्कन आया** और **1707ई. में अपनी मृत्यु तक दक्कन में** रहा।
- **प्रथम चरण (1658-1668ई.)**
    - छत्रपति शिवाजी की **बढ़ती** हुई **शक्ति को रोकना** और **बीजापुर को नियंत्रित करना ।**
    - **1657ई.- कल्याणी और बीदर पर अधिकार किया**
    - **1660ई. में परेंदा को रिश्वत देकर उस पर अधिकार** किया
    - कोई **अतिरिक्त क्षेत्र प्राप्त नहीं** हुआ।
    - **1668ई. में रिश्वत देकर शोलापुर को भी अपने अधिकार में लिया**
- **दूसरा चरण (1668-81ई.)**
    - गोलकुंडा के दो भाइयों, **मदन्ना और अकन्ना की शक्तियाँ** में **वृद्धि** हुई।
    - **1676ई. में** मुगलों ने **बीजापुर पर हमला** किया और **बीजापुर का शासक** खवास खान **को पराजित** किया
    - बहादुर खान और दिलेर खान को **बीजापुर के खिलाफ एक अभियान में आमंत्रित** किया लेकिन **1677ई.** में **मुगलों का बीजापुर हमला विफल** रहा।
- **तीसरा चरण (1681-1687ई.)**
    - **बीजापुर और गोलकुंडा को मराठों की तरफ से अलग करने के प्रयास** किया गया लेकिन यह **नीति विफल** रही
    - बीजापुर की **घेराबंदी की और सफलता** प्राप्त की
    - **1685ई.** में कड़े प्रतिरोध के बावजूद, **मुगलों ने गोलकुंडा** पर कब्जा कर लिया
- **चौथा चरण (1687-1707ई.)**
    - **बीजापुर और गोलकुंडा** के बाद, औरंगजेब ने अपनी सारी सेना **मराठों के खिलाफ केंद्रित** कर दी।
    - शिवाजी ने औरंगजेब के **विद्रोही पुत्र राजकुमार अकबर को आश्रय** दिया।
    - **1689ई. में** औरंगजेब ने छत्रपति **संभाजी महाराज को फांसी** दे दी जिसे इतिहासकारों ने **राजनीतिक भूल** कहा था
    - **अगले मराठा राजा राजाराम** ने **जिंजी में शरण** ली और **मुगलों** के खिलाफ **लड़ाई जारी** रखी
    - **1690-1703ई.** के बीच **औरंगजेब ने मराठों के साथ बातचीत** करने से **इनकार** कर दिया।
    - **1698ई.** में **जिंजी पर आक्रमण** हुआ लेकिन **राजाराम बच निकला** लेकिन मराठाओं का **प्रतिरोध बढ़ता** गया और **मुगलों** को कई **पराजय का सामना** करना पड़ा
    - मराठों ने अपने **कई किलों पर कब्जा कर लिया** और वापस **सतारा में आ गए**
    - **1700-1705ई. के बीच** औरंगजेब दक्कन के मामलो में उलझा रहा।
    - **बाढ़**, **बीमारी** और **लड़खड़ाती मुगल सेना** जैसे अनेक कारणों से **मुगलों की स्थिति कमजोर** होने लगी
    - इसी बीच कई जागीरदारों ने मराठों से किया **गुप्त समझौता किया;** परिणाम स्वरुप **1703ई. में औरंगजेब** ने मराठों के साथ **बातचीत शुरू की**
    - इसी क्रम में **1707 ई.** में सभी **मराठा किलों पर कब्जा** करने के प्रसास में औरंगाबाद के पास **औरंगज़ेब की मृत्यु** हो गयी।

औरंगजेब की धार्मिक नीति

- एक **कट्टर और रूढ़िवादी मुसलमान था।**
- **मुहतसिब** नामक एक अधिकारी के अधी**न नैतिक संहिता को लागू करने के लिए** एक **अलग विभाग** बनाया।
- **शराब** पर **प्रतिबन्ध** लगा दिया।
- **भांग और अन्य नशीले पदार्थों की खेती और उपयोग पर प्रतिबंध** लगा दिया।
- मुगल दरबार में **संगीत पर प्रतिबन्ध** लगा दिया ।
- **दशहरा मनाना बंद करवा दिया , शाही खगोलविदों और ज्योतिषियों को हटा** दिया।
- नए **हिंदू मंदिरों** के **निर्माण** और पुराने **मंदिरों** की **मरम्मत पर प्रतिबंध** लगा दिया।
- हिंदू मंदिरों को न**ष्ट करने की नीति** शुरू की:
    - **मथुरा और बनारस के प्रसिद्ध मंदिरों** को खंडहर बना दिया।
- 1679ई. में **जजिया और तीर्थयात्री कर** फिर से लगाया गया।
- **अन्य मुस्लिम संप्रदायों के प्रति सहिष्णु नहीं** था ।
- **मुहर्रम का जश्न बंद** कर दिया गया।
- साथ ही सिखों के नौवें **गुरु तेग बहादुर को मार** डाला।
    - परिणामस्वरूप सिख **एक युद्धरत समुदाय में परिवर्तित** हो गए ।
- उसकी **धार्मिक नीति** ने **राजपूतों**, **मराठों** और **सिखों** को **मुगल साम्राज्य के दुश्मनों में बदल दिया।**
- इसके परिणामस्वरूप **मथुरा के जाटों और मेवाड़ के सतनामी के विद्रोह** भी हुए।

मुगल साम्राज्य की विदेश नीति

- **16वीं शताब्दी में** मुगलों की विदेश नीति, उस समय की तीन महान शक्तियों अर्थात् **मध्य एशिया के उज़्बेक साम्राज्य, फारस (ईरान) के सफाविद साम्राज्य और तुर्की के ओटोमन साम्राज्य से संबंधित थी।**
- मूल रूप से **मध्य एशिया** के निवासी थे ।
- **मुगलों** को **उज्बेको ने** बाहर निकाल दिया। उज्बेक सुन्नी मुसलमान थे जो मुगलों के प्राकृतिक दुश्मन थे।

- फारस के **सफाविद शासक, शिया मुसलमान थे** और वे स्वयं को **पैगंबर मुहम्मद के सर्वोच्च और सच्चे उत्तराधिकारी** मानते थे।
- तुर्की के मुस्लिम शासकों ने खुद को **बगदाद के खलीफा का सच्चा प्रतिनिधि** होने का **दावा** किया। वे **सुन्नी मुसलमान** थे।
- पश्चिम से **ओटोमन साम्राज्य** (तुर्की सुल्तान) की धमकी ने **फारसियों को मुगलों के साथ दोस्ती करने के लिए मजबूर किया**, खासकर जब उन्हें पूर्व में एक **आक्रामक उज़्बेक शक्ति का सामना** करना पड़ा।

मुगलों की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य:
- विदेशी आक्रमणों से **भारत** की **रक्षा** करना।
- **उज़्बेकों**, **सफाविद** और **तुर्क साम्राज्य के बीच शक्ति का संतुलन** बनाए रखना ।
- अन्य देशों के साथ **व्यापार** और **वाणिज्य बढ़ाना** ।
- मध्य एशिया में अपनी **पैतृक भूमि को जीतना** जहाँ से बाबर को बाहर निकाला गया था।
- **अफगान जनजातियाँ** , जो कि **पंजाब** और **काबुल** के बीच **पर्वतीय क्षेत्र** में रहती थी ,उन पर **नियंत्रण रखना।**

अकबर और उज़्बेक

- जब **हुमायूँ को शेरशाह ने सत्ता से बेदखल** कर दिया तो **सफ़ाविद ने** उसकी **मदद की।**
- अब्दुल्ला खान उज़्बेक के नेतृत्व में **उज़्बेकों की क्षेत्रीय शक्ति तेजी से बढ़ी।**
- बदख्शां से आक्रमण की आशंका जताते हुए **अब्दुल्ला उज़्बेक ने उत्तर-पश्चिम सीमांत के जनजातियो में विद्रोह** को **बढ़ा** दिया ,इसके कारण, **अकबर ने एक अभियान का नेतृत्व** किया और अपने सबसे अच्छे दोस्त, **राजा बीरबल** को **खो दिया।**
- **1585ई. में अब्दुल्ला उज़्बेक ने बदख्शां पर विजय** प्राप्त की जिसके फलस्वरूप **मिर्जा हाकिम** (उनके सौतेले भाई) और उनके पोते दोनों ने **अकबर के दरबार में शरण मांगी** और अकबर ने उन्हें उपयुक्त मनसब दिए गए।
- **मिर्जा हकीम की मृत्यु** के बाद **अकबर ने काबुल पर अधिकार** कर लिया।
- **तुर्क सुल्तान ने उत्तरी ईरान पर आक्रमण** किया था। फलस्वरूप **अकबर** ने **तुर्की की कार्रवाई को अस्वीकार** कर दिया, और मदद के लिए **शाही राजकुमारों के नेतृत्व में ईरान को एक सेना भेजने का प्रस्ताव** रखा।
- **अकबर और अब्दुल्ला खान उज़्बेक के बीच समझौता हुआ** जिसने हिंदुकुश को सीमा के रूप में माना गया ।
- मुगलों ने **बदख्शां** और **बल्ख** में अपनी **रुचि** दिखाई , जिस पर 1585ई. तक **तैमूर राजकुमारों का शासन** था।
- **1595ई. में कंधार पर विजय** प्राप्त करने के बाद, अकबर ने एक **वैज्ञानिक रक्षात्मक सीमा स्थापित** करने के अपने **उद्देश्य को पूरा किया।**
- **अकबर 1598ई. तक लाहौर में रहा** और अब्दुल्ला खान उज़्बेक की मृत्यु के बाद ही **आगरा के लिए रवाना** हुआ।
- अब्दुल्ला की मृत्यु के बाद, **उज्बेक परस्पर विरोधी रियासतों में टूट गए**, और काफी समय तक **मुगलों के लिए खतरा नहीं** रहे।

मुगल फारसी संबंध

- **1649ई. में** बल्ख के मुद्दे को लेकर कारण काबुल क्षेत्र में **उज़्बेक से शत्रुता फिर से बढ़ी** और **खैबर-गज़नी क्षेत्र** में **अफगान जनजातियों में बढ़ते विद्रोह** के कारण, **फारसियों को कंधार पर हमला** करने और **जीतने के लिए प्रोत्साहित** हुए ।
- कंधार को पुनर्प्राप्त करने के लिए राजकुमारों के नेतृत्व में **3 प्रमुख अभियान शुरू किए।**
  - **पहला हमला** - 50,000 की सेना के साथ मुग़ल सेना आगे बढ़ी और **औरंगजेब बल्ख के नायक के रूप में लोकप्रिय** हुआ ।
    - किले के बाहर मुगलों ने फारसियों को हराया, लेकिन **किले पर विजय प्राप्त नहीं** कर सके।
  - **दूसरा हमला-** 3 साल बाद **औरंगजेब** ने एक और प्रयास किया, लेकिन फिर **असफल** रहा।
  - **तीसरा हमला -** 1653ई., सबसे शानदार प्रयास शाहजहाँ के पसंदीदा पुत्र **दारा शिकोह द्वारा** किया गया था
- बार-बार हमले और विफलताओं ने, **मुगलों ने** कंधार के नुकसान की तुलना में **बहुत अधिक नुक्सान उठाया।**
- **1680ई.में - ओटोमन (तुर्की) सुल्तान ने** औरंगजेब के दरबार में एक **दूतावास भेजा** और समर्थन **मांगा।**
- औरंगजेब ईरान के साथ **राजनयिक संबंधों के लिए सहमत** हो गया।

मुगल साम्राज्य का पतन

- **औरंगजेब की मृत्यु के बाद** मुगलों का पतन होने लगा
- औरंगजेब के उत्तराधिकारियों को **,अस्थिरता और वित्तीय संकट का सामना** करना पड़ रहा था ।
- **बहादुर शाह I (1707-12ई.)** के तहत विद्रोह और बाहरी चुनौतियां जारी रहीं, और **वित्तीय संकट** का **सामना** करना पड़ रहा था ।
- **फर्रुखसियर (1713-19ई.)** उत्तराधिकार के युद्ध के बाद **सिंहासन पर बैठा ,**इसके शासन काल में **षड़यंत्र** लगातार **होते रहे** और **बड़े प्रान्त** जिनसे **अधिक भू-राजस्व** प्राप्त होता था धीरे धीरे **अलग हो गए** जैसे **जोधपुर** के शासक के साथ साजिश रचने और उसकी हत्या करने के बाद उसका शासन समाप्त हो गया.
- इन सभी कारणों से **राजनितिक** और **वित्तीय अस्थिरता** पैदा हो गयी

- **मुहम्मद शाह** का शासनकाल (1719-48ई.) में **वंशवाद युद्ध, गुटीय प्रतिद्वंद्विता** होती रही और ईरानी विजेता **नादिर शाह** के **आक्रमण** से **साम्राज्य टूटने** लगा।
- **1748ई. में मुहम्मद शाह** की **मृत्यु** के बाद, **मराठों** ने लगभग पूरे **उत्तर भारत पर कब्जा** कर लिया।
- अब **मुगल शासन केवल दिल्ली** के आसपास के एक छोटे से क्षेत्र में **सिमट** गया, जो **मराठा (1785ई.)** और फिर **ब्रिटिश (1803ई.) के नियंत्रण में** चला गया।
- अंतिम मुगल बादशाह , **बहादुर शाह द्वितीय (शासनकाल 1837-57ई.), को 1857 की क्रांति में** शामिल होने के बाद **अंग्रेजों द्वारा रंगून (बर्मा) में निर्वासित कर दिया गया ।**

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

- **कमजोर उत्तराधिकारी**
  - मुग़ल साम्राज्य **एकतंत्र शासन-प्रणाली पर आधारित** था|
  - मुग़ल शासकों के प्रयासों के फलस्वरूप **मुग़ल साम्राज्य का विस्तार** हुआ और साम्राज्य की **सुरक्षा एवं प्रतिष्ठा पर कोई आँच नहीं** आई,लेकिन औरंगजेब की मृत्यु के बाद **बहादुरशाह प्रथम से लेकर बहादुरशाह द्वितीय** तक **सभी मुग़ल शासक केवल नाम मात्र के शासक** रह गये थे.
  - ज्येष्ठ पुत्र के **राजा होने के नियम का पालन नहीं** किया गया।
  - सिंहासन के लिए **भाइयों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध।**
  - औरंगजेब के **उत्तराधिकारी कमजोर** थे|
  - **अकुशल सेनापति** और विद्रोहों को दबाने में असमर्थ थे।
- **मुगल कुलीनता का पतन**
  - **प्रारंभिक मुगल शासक** (अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ) के कुलीन (श्रेष्ठ) व्यक्तियों में बैरम खान, मुनीम खान,मुजफ्फर खान और अब्दुर रहीम खान खाना इत्माद उद दौला और महाबत खान, आसफ खान और सादुल्ला खान जिसे लोग शामिल थे।
  - लेकिन **समय के साथ कुलीनों** का **चरित्र** भी **क्षीण** होता गया।
- **औरंगजेब का हिंदुओं पर धार्मिक उत्पीड़न**
  - **औरंगजेब** यह महसूस करने में **विफल रहा** कि **विशाल मुगल साम्राज्य लोगों के समर्थन** पर निर्भर था।
  - उसने **राजपूतों का समर्थन खो दिया** जिन्होंने साम्राज्य की ताकत में बहुत योगदान दिया था।
  - **सिखों**, **मराठों, जाटों** और **राजपूतों** के साथ **युद्धों** ने मुगल साम्राज्य के **संसाधनों को खत्म** कर दिया था।
- **मुगल सेना का मनोबल गिराना**
  - **सम्राट** और **व्यक्तिगत सैनिकों के बीच कोई सम्बन्ध नहीं** था , जिन्हें उनके **सेनापति** या **मनसबदार द्वारा भुगतान** किया गया , सीधे **शाही खजाने से नहीं।**
  - **औरंगजेब** और उसके **उत्तराधिकारियों** के शासनकाल **के दौरान** इसी प्रकार के **अंतर्निहित दोष बढ़** गए |
- **आर्थिक दुर्बलता**
  - **मुंगल सम्राटों** की **साम्राज्यवादी नीति** के कारण **सरकारी खजाना** निरन्तर **खाली** होता गया।
  - **औरंगजेब के शासनकाल में आर्थिक संकट** उस समय **अधिक गहरा** हो गया जब उसने दक्षिणी राज्यों के विजय अभियान में **अपार धन का अपव्यय किया।**
  - औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों ने **शाही खजाने को बढाने के लिए कोई कदम नहीं** उठाया, उनकी **विलासिता** एवं **अधिक खर्च** करने की आदत ने **आर्थिक समस्या को और अधिक जटिल** बना दिया।
  - राजमहल में **रानियाँ** व **राजपरिवार** के **अन्य सदस्य** भी भूखों मरने लगे।
  - **आर्थिक दुर्बलता** की यह स्थिति अधिक दिनों तक मुगल साम्राज्य को जीवित नहीं रख सकी।
- **विदेशी आक्रमण**
  - **विदेशी आक्रमणों ने** मुगलों की शेष शक्ति को नष्ट कर दिया और विघटन को तेज कर दिया।
  - **नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली** के आक्रमणों के परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा धन लूटा गया। जिसने साम्राज्य की स्थिरता को हिलाकर रख दिया।
- **क्षेत्रीय शक्तियों से चुनौती:**
  - मजबूत **मुग़ल शासको के समय** प्रान्तों को **दिल्ली से नियंत्रित** किया जाता था । लेकिन बाद के **मुगल शासक कमजोर प्रशासक** थे जिसका फायदा उठाकर **दूर के प्रांत स्वतंत्र** हो गए।जिसके कारण **मुगल साम्राज्य का विघटन** होने लगा
- **औरंगजेब की दक्कन नीति:**
  - **औरंगजेब की दक्कन नीति के कारण** ,सर्वश्रेष्ठ **सैनिकों का विनाश हो गया** और **मुगल प्रतिष्ठा को धक्का** लगा जिससे **मुगलों का पतन** होने लगा **।**
  - औरंगजेब की मृत्यु के इकतीस वर्षों के भीतर, उसके उत्तराधिकारियों को **सिखों, जाटों, बुंदेलों, राठौरों, कछवाहा और सिसोदिया के साथ युद्ध** करना पड़ा और सैन्य टुकड़ी में कोई हिंदू जनजाति उनके पक्ष में नहीं बची।
  - उत्तर भारत से लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के कारण बहुत से प्रांतीय गवर्नर (**सूबेदार**) **स्वतंत्र** हो गए और कुछ क्षेत्रों में तो अशांति फ़ैल गयी
- **जागीरदारी संकट**
  - औरंगजेब के शासनकाल के अंतिम वर्षों के दौरान, नियुक्त किए गए **जागीरदारों की संख्या** इतनी बड़ी संख्या में **बढ़ गई** थी कि **पैबाकी भूमि** (जगीर के रूप में दी जाने वाली भूमि) की **कमी हो गयी।**
  - **संसाधनों में कमी**

    इस प्रकार इन सभी कारणों से चट्टान की तरह मजबूत मुग़ल वंश का पतन हो गया

2 CHAPTER

भारत का बजट 2025-26

भारत सरकार ने बजट 2025-26 को विकास की यात्रा का बजट का कहा हैं जिसके अंतर्गत विकसित भारत 2047 विजन को साकार करने का प्रयास किया गया हैं ।

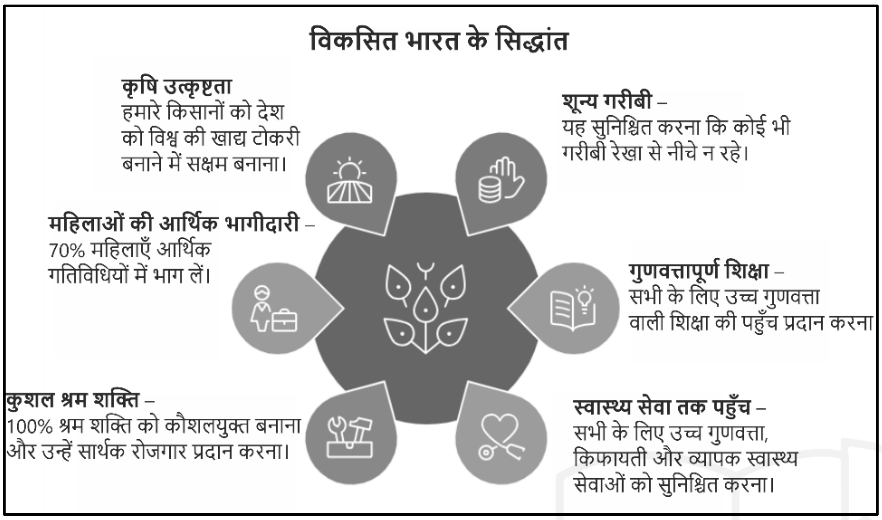

- **'सबका विकास' लक्ष्य के साथ केंद्रीय बजट 2025-26** का उद्देश्य सभी क्षेत्रों में संतुलित विकास को प्रोत्साहित करना है।
- बजट की थीम के अनुरूप, वित्त मंत्री ने **विकसित भारत के व्यापक सिद्धांतों को रेखांकित** किया है।
    - गरीबी से मुक्ति
    - 100% लोगों को अच्छी गुणवत्ता वाली स्कूली शिक्षा
    - उच्च गुणवत्ता युक्त, वहनीय और समग्र स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं उपलब्ध करवाना
    - सार्थक रोजगार के साथ 100% कुशल श्रम बल
    - 70% महिलाएं आर्थिक गतिविधियों में संलग्न
    - भारत को विश्व का फूड बास्केट' बनाने में किसानों की प्रभावी भूमिका
- इस बजट मे गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के विकास पर विकास पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया हैं ।

विकास को गति देने वाले इंजन

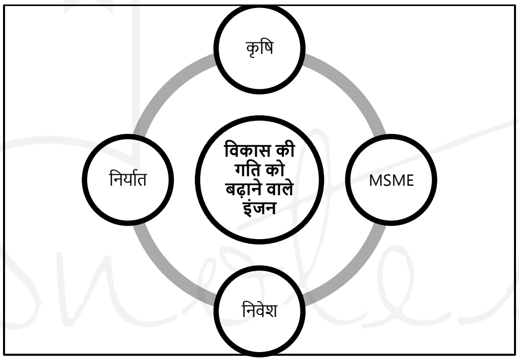

1. **कृषि (Agriculture)** :
    a. **प्रधानमंत्री कृषि धन्य धान्य योजना :** कृषि जिला विकास कार्यक्रम
        I. **कवरेज :** मौजूदा योजनाओं और विशेष उपायों के अभिसरण के माध्यम से, यह कार्यक्रम कम उत्पादकता, मध्यम फसल तीव्रता और औसत से कम क्रेडिट मापदंडों वाले 100 जिलों को कवर करेगा।
        II. लक्ष्य: 1.7 करोड़ किसान।

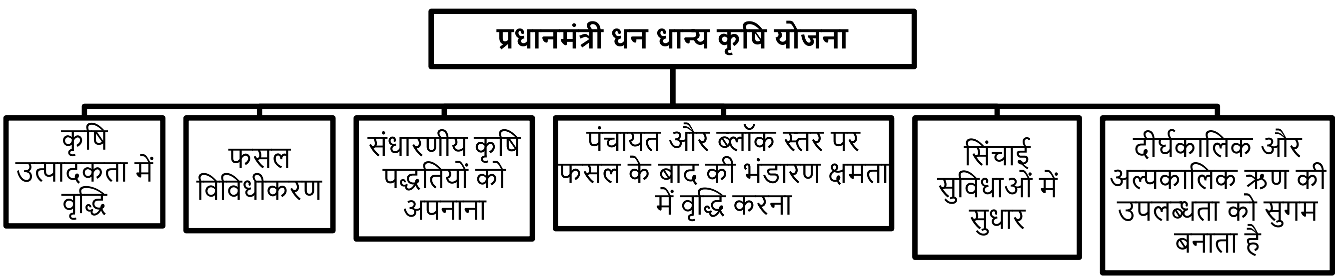

b. बहु- क्षेत्रीय 'ग्रामीण समृद्धि' और लचीलापन' कार्यक्रम

I. इसे राज्यों के साथ साझेदारी में लॉन्च किया जाएगा।
II. **उद्देश्य:** कौशल, निवेश, प्रौद्योगिकी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करके कृषि में अल्प-रोजगार की समस्या को दूर करना ।
III. लक्ष्य: ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त अवसर पैदा करना ताकि प्रवासन एक विकल्प हो, लेकिन आवश्यकता नहीं ।
IV. कवरेज : चरण-1 में, 100 विकासशील कृषि - जिलों को कवर किया जाएगा।
V. फोकस क्षेत्र: ग्रामीण महिलाएं, युवा किसान, ग्रामीण युवा, सीमांत और लघु किसान एवं भूमिहीन परिवार |

c. किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) की बढ़ी हुई सीमा: 7.7 करोड़ किसानों के लिये ऋण की सीमा को सुविधाजनक बनाने के लिये इसे **3 लाख रुपए से बढ़ाकर 5 लाख रुपए** कर दिया गया।

d. उच्च उपज देने वाले बीजों पर राष्ट्रीय मिशन: अनुसंधान को मज़बूत करना, 100 से अधिक उच्च उपज देने वाली और कीट प्रतिरोधी बीज किस्मों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

e. कपास उत्पादकता मिशन: सतत् कृषि को बढ़ावा देने, अतिरिक्त लंबे रेशे वाले कपास का उत्पादन बढ़ाने और गुणवत्ता में सुधार लाने के लिये 5 वर्ष की पहल।

f. बिहार में मखाना बोर्ड: मखाना के **उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्द्धन** को बढ़ाने हेतु इसकी स्थापना की जाएगी।

g. फलों और सब्जियों के लिये व्यापक कार्यक्रम: कुशल **आपूर्ति श्रृंखला** को बढ़ावा देना और किसानों के लिये बेहतर बाज़ार मूल्य सुनिश्चित करना।

h. मत्स्य विकास: भारतीय विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र और उच्च सागर में **सतत् मत्स्य पालन** के लिये नई रूपरेखा, **अंडमान एवं निकोबार तथा लक्षद्वीप** पर ध्यान केंद्रित करना।

i. असम में यूरिया संयंत्र: कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिये **ब्रह्मपुत्र घाटी उर्वरक निगम लिमिटेड (BVFCL)** के परिसर में 12.7 लाख मीट्रिक टन क्षमता का एक नया यूरिया संयंत्र स्थापित किया जाएगा।

j. बजट 2025-26 में सरकार ने 2030 तक भेड़ और बकरियों में **Peste Des Petits Ruminants (PPR)** (पेस्ट ऑफ स्मॉल रुमिनेंट्स) रोग को समाप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह कृषि और पशुपालन क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए सरकार की बड़ी पहल का हिस्सा है।

2. MSME:

a. MSME के मापदंड मे संशोधन –

करोड़	निवेश		टर्नओवर	
	मौजूदा	सशोधित	मौजूदा	संशोधित
सूक्ष्म उद्यम	1	2.5	5	10
लघु उद्यम	10	25	50	100
मध्यम उद्यम	50	125	250	500

b. श्रम प्रधान क्षेत्रों के लिए उपाय

i. **फुटवियर और चमड़े के क्षेत्र के लिए फोकस प्रोडक्ट स्कीम:** इस योजना से 22 लाख लोगों के लिए रोजगार सृजन होने की उम्मीद है। इसके अलावा, ₹4 लाख करोड़ का कारोबार और ₹1.1 लाख करोड़ से अधिक के निर्यात का लक्ष्य है।

ii. **खिलौना क्षेत्र के लिए उपाय:** इस क्षेत्र में क्लस्टरों, कौशल विकास, और एक उत्पादन पारिस्थितिकी तंत्र पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जो 'मेड इन इंडिया' ब्रांड का प्रतिनिधित्व करने वाले उच्च गुणवत्ता, अद्वितीय, नवाचारी और टिकाऊ खिलौनों का निर्माण करेगा।

iii. **खाद्य प्रसंस्करण के लिए समर्थन:** बिहार में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फूड टेक्नोलॉजी की स्थापना की जाएगी, जिससे किसानों की आय बढ़ेगी। इसके अलावा, युवाओं के लिए कौशल विकास, उद्यमिता और रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएंगे।

c. सूक्ष्म उद्यमों के लिए क्रेडिट कार्ड्स: उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत सूक्ष्म उद्यमों के लिए ₹ 5 लाख की सीमा वाले कस्टमाइज्ड क्रेडिट कार्ड्स की सुविधा प्रदान की जाएगी। पहले वर्ष में 10 लाख ऐसे कार्ड्स जारी किए जाएंगे।

d. पहली बार उद्यमिता करने वालों के लिए योजना: 5 लाख पहली बार उद्यमिता करने वालों के लिए, जिनमें महिलाएं, अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जनजातियां शामिल हैं, एक नई योजना शुरू की जाएगी, जिसके तहत अगले 5 वर्षों में ₹ 2 करोड़ तक की टर्म लोन प्रदान की जाएगी।

e. निर्माण मिशन जिसका उद्देश्य होगा:

i. व्यापार करने में आसानी और लागत को कम करना;
ii. भविष्य के लिए तैयार कार्यबल तैयार करना जो मांग में हो;
iii. एक जीवंत और गतिशील MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) क्षेत्र;
iv. प्रौद्योगिकी की उपलब्धता;
v. गुणवत्ता वाले उत्पाद;
vi. जलवायु मित्रवत विकास के लिए स्वच्छ प्रौद्योगिकी निर्माण।

3. लोगों, अर्थव्यवस्था और नवाचार में निवेश :

a. राज्य सरकारों को अवसंरचना के लिए समर्थन: ₹ 1.5 लाख करोड़ का बजट, राज्यों को पूंजीगत व्यय के लिए 50 साल की ब्याज मुक्त ऋण और सुधारों के लिए प्रोत्साहन।

b. जल जीवन मिशन: 100% कवरेज प्राप्त करने के लिए मिशन को 2028 तक बढ़ाया गया है, साथ ही कुल बजट में वृद्धि की गई है।

Unleash the topper in you

c. ऊर्जा क्षेत्र सुधार:

i. वितरण सुधारों और अंतर-राज्यीय संचरण के विस्तार को प्रोत्साहित करना।

ii. राज्यों को 0.5% GSDP तक अतिरिक्त उधारी की अनुमति, यह सुधारों पर निर्भर करेगा।

d. संपत्ति मुद्रीकरण योजना 2025-30: ₹ 10 लाख करोड़ के नए परियोजनाओं में पूंजी लगाने के लिए लॉन्च की गई।

e. शहरी चुनौती निधि: ₹ 1 लाख करोड़ का आवंटन 'शहरों को विकास केंद्र' और 'शहरी पुनर्विकास' सहित जल और स्वच्छता संबंधित प्रस्तावों को लागू करने के लिए।

f. सार्वजनिक समुद्री विकास निधि: ₹ 25,000 करोड़ की कोष राशि, दीर्घकालिक वित्तपोषण के लिए, जिसमें सरकार का 49% योगदान होगा।

g. परमाणु ऊर्जा मिशन: परमाणु ऊर्जा अधिनियम और परमाणु क्षति पर नागरिक दायित्व अधिनियम में संशोधन के प्रस्ताव, निजी क्षेत्र के साथ सक्रिय साझेदारी के लिए।

h. UDAN योजना: 120 नए गंतव्यों तक क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और अगले 10 वर्षों में 4 करोड़ यात्रियों का परिवहन।

i. बिहार की भविष्य की आवश्यकताएं: ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट्स, पश्चिमी कोशी नहर ERM परियोजना के लिए वित्तीय समर्थन।

j. SWAMIH फंड-2: ₹ 15,000 करोड़ का फंड एक लाख आवासीय इकाइयों के शीघ्र निर्माण के लिए, मिश्रित वित्तपोषण के माध्यम से।

k. प्रधानमंत्री अनुसंधान फेलोशिप: IITs और IISc में प्रौद्योगिकी अनुसंधान के लिए 10,000 फेलोशिप प्रदान करने के लिए।

l. अनुसंधान, विकास और नवाचार: निजी क्षेत्र द्वारा संचालित अनुसंधान, विकास और नवाचार पहल को लागू करने के लिए ₹ 20,000 करोड़ आवंटित।

m. जीन बैंक: फसल जर्मप्लाज्म के लिए दूसरा जीन बैंक स्थापित किया जाएगा, जिसमें 10 लाख जर्मप्लाज्म लाइन्स होंगी, जो भविष्य में खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

n. ज्ञान भारत मिशन:

i. हमारे पांडुलिपि धरोहर का दस्तावेजीकरण और संरक्षण करने के लिए, 1 करोड़ से अधिक पांडुलिपियों को कवर किया जाएगा।

ii. भारतीय ज्ञान प्रणालियों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल रिपोजिटरी की स्थापना की जाएगी, ताकि ज्ञान साझा किया जा सके।

o. राष्ट्रीय भू-संस्थान मिशन:

i. बुनियादी भू-संस्थान और डेटा विकसित करने के लिए।

ii. PM गति शक्ति का उपयोग करते हुए भूमि अभिलेखों के आधुनिकीकरण, शहरी योजना और अवसंरचना परियोजनाओं के डिजाइन को बढ़ावा दिया जाएगा।

p. पर्यटन के लिए रोजगार-आधारित विकास:

i. शीर्ष 50 पर्यटन स्थलों को राज्यों के साथ साझेदारी में विकसित किया जाएगा।

ii. सरल ई-वीसा सुविधाओं की शुरुआत।

iii. हमारे युवाओं के लिए गहन कौशल विकास कार्यक्रम।

iv. राज्यों को प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन।

v. होमस्टे के लिए MUDRA ऋण।

vi. पर्यटन स्थलों तक यात्रा और कनेक्टिविटी की सुविधा।

4. निर्यात (Exports) :

a. निर्यात संवर्द्धन मिशन: क्षेत्रीय और मंत्रालयी लक्ष्यों के साथ एक निर्यात संवर्द्धन मिशन का शुभारंभ किया जाएगा, जिसे वाणिज्य मंत्रालय, MSME मंत्रालय और वित्त मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से चलाया जाएगा।

b. भारतट्रेडनेट (BTN): एक **एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार** दस्तावेजीकरण और वित्तपोषण समाधान की सुविधा प्रदान करेगा।

c. ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (GCC) हेतु राष्ट्रीय ढांचा: उभरते हुए द्वितीय श्रेणी (टियर-2) शहरों में आउटसोर्सिंग केंद्रों (Global Capability Centers) को बढ़ावा देने के लिये नीतिगत प्रोत्साहन दिये जाएंगे, जिससे भारत एक प्रमुख वैश्विक सेवा प्रदाता के रूप में उभर सके।

d. एयर कार्गो के लिये भंडारण सुविधा: उच्च-मूल्य वाले नाशवंत (perishable) उत्पादों के निर्यात को सक्षम बनाने के लिये उन्नत भंडारण अवसंरचना का विकास किया जाएगा, जिससे अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक तेज़ और कुशल आपूर्ति सुनिश्चित हो सके।

प्रमुख बिन्दु :

- **व्यय:** सरकार का अनुमान है कि 2025-26 में व्यय **50,65,345 करोड़** रुपये होगा, जो **2024-25** के संशोधित अनुमान से **7.4%** अधिक है।
    - **ब्याज भुगतान कुल व्यय** का **25%** और **राजस्व प्राप्तियों** का **37%** है।
- **प्राप्तियां:** 2025-26 में प्राप्तियां (ऋण को छोड़कर) **34,96,409 करोड़** रुपये रहने का अनुमान है, जो 2024-25 के संशोधित अनुमान से लगभग **11.1%** अधिक है। कर राजस्व, जो प्राप्तियों का मुख्य भाग है, 2024-25 के संशोधित अनुमान से **11% बढ़ने का** अनुमान है।
- **GDP**: सरकार ने **2025-26** के लिए नाममात्र **GDP वृद्धि दर 10.1%** का अनुमान लगाया है (अर्थात वास्तविक वृद्धि और मुद्रास्फीति का योग) ।
- **राजस्व और वित्तीय घाटा:** 2025-26 में राजस्व घाटा GDP के **1.5%** तक पहुंचने का लक्ष्य है, जो **2024-25** के संशोधित अनुमान **(1.9%)** से कम है ।
    - **2025-26** में वित्तीय घाटा **GDP के 4.4%** तक रखने का लक्ष्य है, जो 2024-25 के संशोधित अनुमान **(4.8%)** से कम है।
- **कर्ज:** केंद्रीय सरकार **मार्च 2031** तक अपने शेष बकाएदार कर्ज को **GDP के लगभग 50%** तक घटाने का लक्ष्य रखती है। **2025-26** में, शेष बकाएदार कर्ज **GDP के 56.1%** रहने का अनुमान है।